ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

वैदिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का संवाहक

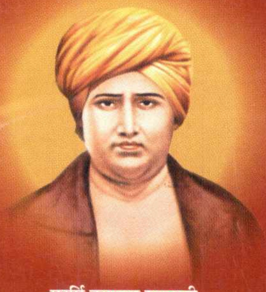

महर्षि दयानन्द सरस्वती

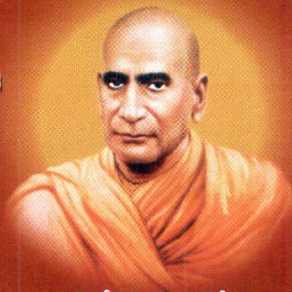

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का मुख पत्र

वैसाख वि. स. २०७४ • कलियुगाब्द ५११८ • वर्ष : ०४ • अंक : ५ • मई २०१७

'जेईई मेन्स में गुरुकुल के 18 ब्रह्मचारी उत्तीर्ण'

विस्तृत समाचार पृष्ठ 12 पर पढ़ें ...

स्वामित्व :

गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरियाणा)-136 119

(केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् नई दिल्ली से 10+2 तक सम्बद्ध)

दूरभाष: 01744-238048, 238648

E-mail : kurukshetragurukul@gmail.com Website : www.gurukulkurukshetra.com

AN ISO 2008 CERTIFIED INSTITUTE

वीआईपी कल्चर को समाप्त करने के उद्देश्य से अपनी गाड़ी से स्वयं लालबत्ती उतारते हुए हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

ऊना में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 126वीं जयंती पर आम जनमानस के साथ जमीन पर भोजन ग्रहण करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

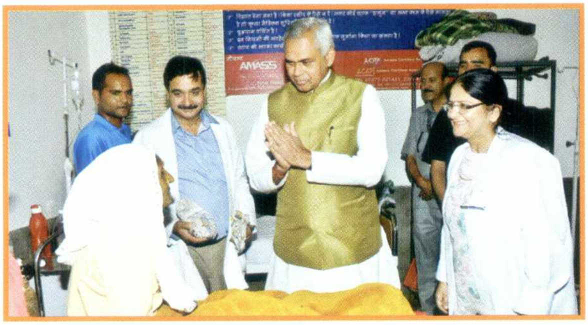

हमीरपुर के चिकित्सालय परिसर में रोगियों से कुशलक्षेम जानते हुए हुए हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

डीएवी कालेज, चंडीगढ़ में आयोजित वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हुए राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

कैथल में जिला बॉक्सिंग संगठन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में समय नवादित खिलाड़ियों व प्रशिक्षकों के साथ राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

पंजाब के डेराबस्सी में मैसर्ज आर्यवर्त कूल चैन द्वारा निर्मित कोल्ड स्टोर के उद्घाटन अवसर पर आचार्य देव्रवत जी, राधाकृष्ण जी व अन्य महानुभाव

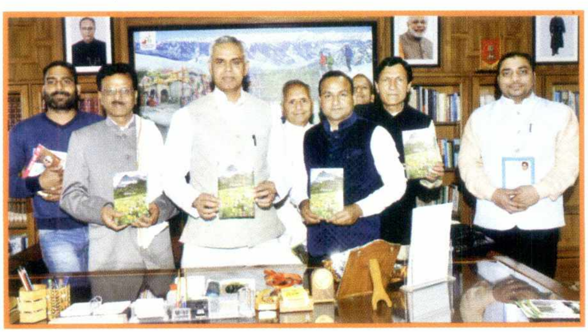

राजभवन शिमला में डॉ. कृष्णमोहन पांडेय द्वारा लिखित 'शास्त्रसन्देहः' पुस्तक का विमोचन करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

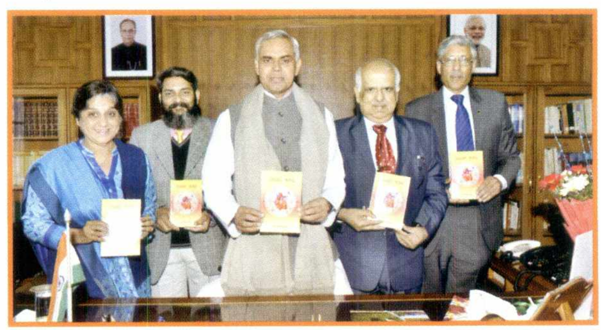

राजभवन शिमला में डॉ. अजीत द्वारा लिखित 'स्वस्थ हृदय' पुस्तक का विमोचन करते हुए महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी

ओ३म्

गुरुकुल दर्शन

'सम्पादक परिवार'

संरक्षक : आचार्य देवव्रत
(महामहिम राज्यपाल, हि. प्र.)
मुख्य संपादक : कुलवंत सिंह सैनी
मार्गदर्शक : विश्वबंधु आर्य
प्रबंध-संपादक : शमशेर सिंह
सह-संपादक : आचार्य सत्यप्रकाश
सूबेप्रताप आर्य
सुखविन्द्रपाल आर्य
नंदकिशोर आर्य
कानूनी सलाहकार : राजेन्द्र सिंह 'कलेर'
वित्तीय सलाहकार : सतपाल सिंह
पत्रिका व्यवस्थापक: राजीव कुमार आर्य
वितरण व्यवस्थापक: भोपाल सिंह आर्य
: अशोक कुमार

गुरुकुल भूमिदाता
सेठ ज्योति प्रसाद जी

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृ.सं.
1.	सम्पादकीय : रिश्तों पर हावी होती आधुनिकता	02
2.	स्वामी दयानन्द और मूर्तिपूजा	03
3.	गीत: जागो रे व्रतधारक जागो	03
4.	गृहस्थ-आश्रम	04
5.	सब मनुष्यों के पालनीय सत्य धर्म का निश्चय और असत्य मतों का त्याग	06
6.	समसामयिकी स्मरणिका	09
7.	कविता : दिव्य दर्शन (हिन्दी व संस्कृत अनुवाद)	10
8.	यज्ञ की महिमा	10
9.	कविता : बेटा-बेटी एक समान	10
10.	गुरुकुल समाचार	11
11.	चढ़ अग्निपंख उड़ गये राष्ट्रऋषि कलाम	13
12.	कुल गीत : गुरुकुल प्यारा जग में हमारा	14
13.	शिवरात्रि : भारत के स्वर्णिम भविष्य की रात्रि	15
14.	Poverty Of India	17
15.	My Mother	17
16.	चल उड़ जा रहे पंछी	18
17.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	19
18.	कैसे तैयार करें जीवामृत	20
19.	नाशार्स : लक्षण और उपचार	21
20.	क्या महाभारत में मंत्र हैं	22
21.	गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ	24

आवश्यक सूचनाएं

1. **'गुरुकुल दर्शन'** मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखकों के हैं, संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्याय-क्षेत्र कुरुक्षेत्र होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के अन्दर ही मानी जाएगी।
2. पत्रिका के विलम्ब अथवा अनियमित रूप से मिलने की स्थिति में चलभाष 8689002402 पर सूचना देवें। पत्रिका के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की हमें अपेक्षा रहेगी।

– संपादक

महानता का महत्त्व जीनव के सत्य में हैं, जीवन के वैभव में नहीं।

संपादकीय

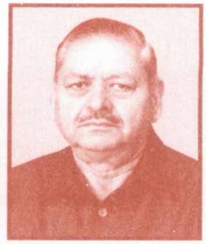

आपसी सम्बंधों पर हावी होती आधुनिकता

वर्तमान युग भौतिक सुख-समृद्धि का युग है। आधुनिक उपकरण, मशीन व भौतिक सुविधाएँ जीवन-मूल्यों को निगल रही हैं। हमारा चिन्तन स्वार्थ केन्द्रित हो गया है और हमारी सोच दिन-प्रतिदिन संकीर्ण होती जा रही है। अतिथि को देवता मानने वाले अपने जन्मदाताओं को ही बेगाना, नाकारा व अनावश्यक मानने लगे हैं। संस्कार, संस्कृति व सभ्यता का दम्भ भरने वाले हम पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होकर व आधुनिक शिक्षा से स्वतंत्रता के प्रति जागरूक होकर किसी के नियंत्रण में नहीं रहना चाहते। पश्चिमी सभ्यता के दुर्गुण तो हम अपना रहे हैं और अपनी संस्कृति, अपनी विरासत को भूलते जा रहे हैं।

हमारी मानसिकता इतनी निकृष्ट हो चुकी है कि हम अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि सम्बंधियों को भी अपने परिवार का अंग नहीं मानते। परिवार की परिभाषा इतनी संकुचित हो गई है कि उसके अंतर्गत पति-पत्नी व बच्चों के सिवा किसी को सम्मिलित ही नहीं किया जाता। आज हम अपने हित के लिए विश्व, देश, गाँव, समुदाय, परिवार व यहाँ तक कि अपने बच्चों, पति या पत्नी तक को भी प्रयोग करने से नहीं चूकते। यदि हम समाज, समुदाय या परिवार का थोड़ा भी ध्यान रखते तो अमृत के समान दुग्ध में रसायन नहीं मिलाये जाते, शीतल पेय में हानिकारक कीटनाशक नहीं डाले जाते। भाई-भाई का गला नहीं काटता, माँ-बाप फालतू सामान प्रतीत नहीं होते और वृद्धाश्रमों की कहीं कोई जगह नहीं होती।

हिंसा, झूठ, चोरी व बलात्कार का जो स्तर आज है इसी से प्रमाणित होता है कि हमारे बीच किसी भी प्रकार के रिश्ते नहीं रह गये हैं। हमारी मानसिकता इतनी विकृत हो चुकी है कि हम अपनी कमियों को स्वीकार न कर, अपनी लापरवाही व निकम्मेपन का दोष भी अपने माता-पिता पर ही मढ़ने की कोशिश करते हैं। जो कुछ भी अच्छा होता है, उसका श्रेय किसी के साथ बाँटना नहीं चाहते और जो कुछ भी बुरा होता है उसकी जिम्मेदारी दूसरों के सिर डालकर अपने आप को साफ बचाने का प्रयत्न करते हैं। हम सोचते हैं कि हमारी कोई जिम्मेदारी थी ही नहीं क्योंकि जिन बड़े-बुजुर्गों पर हम ये जिम्मेदारी डालते हैं, वे बुजुर्ग या तो हमारी कृपा पर जीते हैं या दर-दर की ठोकर खाते फिरते हैं। इसके विपरीत उनकी महानता देखिये वे फिर भी हमारा भला ही चाहते हैं। उनके दुखों का अहसास भी हमें तब ही हो पायेगा जब हम उस स्थिति में पहुँचेंगे किन्तु तब तक काफी समय निकल चुका होगा, हम हाथ मलने के सिवा कुछ नहीं कर पायेंगे।

सम्बंधों का कमजोर होना, परिवार का कमजोर होना है। परिवार का कमजोर होना, समाज का कमजोर होना है और समाज कमजोर होने से हमारा राष्ट्र, हमारा देश, हमारा यह भारतवर्ष कमजोर हो रहा है। समाज में बढ़ रहे अपराध, व्यक्ति में बढ़ रहा तनाव, युवाओं में बढ़ती नशे की लत आदि बिगड़ते सम्बंधों के कारण ही हो रहा है। अतः हमें समझना होगा कि रिश्तों पर निजी स्वार्थ हावी न होने दें, रिश्तों को बचाने के लिए सतत प्रयास किये जाने की आवश्कता है।

आज हमारे आसपास बड़े-बड़े विद्यालय, शिक्षण संस्थान है जहाँ पर गुणी विद्वानों द्वारा बच्चों को पढ़ाया जा रहा है, उन्हें अक्षरज्ञान दिया जाता है मगर आज हमारे बच्चों में अच्छे संस्कारों का अभाव है। जब अच्छे संस्कार नहीं होगें, उन्हें अच्छे-बुरे की पहचान नहीं होगी तो भला वे अपने बड़ों का सम्मान क्या करेंगे। यही कारण है कि आज भी समाज में **'गुरुकुल शिक्षा पद्धति'** का विशेष महत्त्व है क्योंकि गुरुकुलों में बालक को अक्षरज्ञान के साथ-साथ अच्छे संस्कार, बड़ों का आदर-सत्कार करने की शिक्षा भी दी जाती है, उन्हें आपसी भाईचारे और समरसता के साथ रहना सिखाया जाता है। अंत में बस इतना ही कहूँगा कि तेजी से आगे निकलने की चाहत में अपने सम्बंधों को न भूलें क्योंकि यदि अपने रिश्ते, अपने अपने ही आपसे रूठ गये तो फिर इस उन्नति, इस तरक्की और इस आधुनिकता का कोई औचित्य नहीं।

- कुलवंत सिंह सैनी

आज तक कभी कोई मनुष्य नकल करके महान नहीं बना।

स्वामी दयानन्द और मूर्तिपूजा

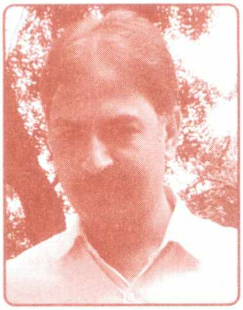

भावेश मेरजा

आर्य समाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का देहावसान 30 अक्तूबर 1883 को अजमेर में हुआ। उन्हें विरोधियों ने जोधपुर में विष पिला दिया और चिकित्सा में भी डॉक्टर अलीमर्दान खाँ की भूमिका अत्यन्त संदिग्ध रही। जीवन के इसी अंतिम वर्ष (1883 ई0) में उदयपुर से जोधपुर जाते हुए स्वामी जी ने शाहपुरा में 9 मार्च से 26 मई पर्यन्त निवास किया। शाहपुरा में एक दिन बिहारीलाल नामक एक विद्यार्थी स्वामी जी से मिला। इस विद्यार्थी और स्वामी जी के बीच निम्नलिखित प्रश्नोत्तर हुआ :-

प्रश्न - पाणिनि की अष्टाध्यायी के तीसरे अध्याय के दूसरे पाद के 177वें सूत्र 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जिपृजुग्रावस्तुवःक्विप्' में ग्राव-स्तुति अर्थात् पत्थर की स्तुति प्रतिपादित की गई है।

उत्तर - स्तुति अनेक वस्तुओं की होती है। जैसे कारीगर कहते हैं कि यह पत्थर उत्तम है, यह काष्ठ उत्तम है। 'ग्रावा' का अर्थ पत्थर अवश्य है परन्तु इससे पत्थर की मूर्ति की सिद्धि नहीं होती।

प्रश्न - (पाणिनि के एक सूत्र का उल्लेख करके कहा कि) इससे शिव, स्कन्द, विष्णु प्रभृति की मूर्ति सिद्ध होती है।

उत्तर - उस समय शिव, विष्णु आदि मनुष्यों के नाम होते थे। विदेश आदि में जाने पर उनकी मूर्तियाँ (स्मरण करने के लिए) रखी जाती थी, परन्तु इससे शिव, विष्णु आदि की पूजा सिद्ध नहीं होती।

प्रश्न - ईश्वर सर्वव्यापक है या नहीं?

उत्तर- परमेश्वर सर्वव्यापक है।

प्रश्न - तो फिर मैं प्रस्तरादि में ईश्वर को व्यापक समझ कर उसकी पूजा कर सकता हूँ?

उत्तर - तुम्हारी झांझ, घण्टे आदि और तुम्हारी वाणी, गले आदि में भी ईश्वर है तो तुम ईश्वर के एक अंश को आहत करके (घण्टा-घड़ियाल बजाकर) उसके दूसरे अंश (प्रस्तरादि) की पूजा करते हो, यह क्या बात है? और यदि तुम पत्थर में यथार्थ रूप से ईश्वर-बुद्धि करके पत्थर को ईश्वर कर सकते हो तो बालू को शर्करा समझकर भोजन क्यों नहीं करते?

बिहारीलाल ने स्वामी जी की इस प्रकार की युक्तियाँ सुनकर मूर्तिपूजन करना त्याग दिया और वह स्वामी जी का शुद्ध चित्त से अनुयायी हो गया।

स्रोत : बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय संगृहीत महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित (28वां अध्याय) **प्रस्तुति : भावेश मेरजा।**

शिव शोध बोध प्रतिपल पागो। जागो रे व्रतधारक जागो।।

देवनारायण भारद्वाज,
'वरेण्यम' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग,
अलीगढ़ -202001 (उत्तर प्रदेश)

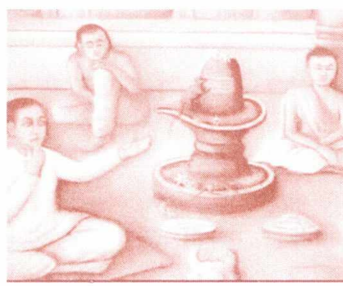

जब जाग गये तो सोना क्या,
बैठे रहने से होना क्या,
कर्त्तव्य पंथ पर बढ़ जाओ,
तो दुर्लभ चांदी-सोना क्या।
मत तिमिर ताक श्रुति पथ त्यागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।1।।

बन्द नयन के स्वप्न अधूरे,
खुले नयन के होते पूरे,
यही स्वप्न संकल्प जगाये,
करें ध्येय के सिद्ध कंगूरे,
संकल्प बोध उठे अनुरागो।
जागो रे व्रतधारक जागो।।2।।

शिव निशा जहाँ मुस्काती है,
जागरण ज्योति जग जाती है,
संकल्पहीन सो जाते हैं,
धावक को राह दिखाती है,
श्रुति दिखा छोड़कर मत भागो,
जागो रे व्रतधारक जागो।।3।।

बोध मोद का लगता फेरा,
मिटता पाखण्डों का घेरा,
शिक्षा और सुरक्षा सधती,
हटता आडम्बर का डेरा,
बोध गोद प्रिय प्रभु से मांगो,
जागो रे व्रतधारक जागो।।4।।

कुल फूल मूल शिव सौगन्धी,
शंकर कर्षण सूत संबंधी,
रक्षा, संचेत अमरता से,
हों, जन्म उन्हीं के यश गंधी।
योग, क्षेम के क्षितिज छंगालो,
जागो रे व्रत धारक जागो।।5।।

महान वह है जिसने अपने शत्रुओं को हराकर उन्हें अपना बना लिया।

गृहस्थ धर्म

*ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चारों आश्रमों का अपने-अपने स्थान पर विशेष महत्त्व है। इनमें से कोई भी उपेक्षणीय या ग्रहणीय नहीं है। इसमें ध्यान देने वाली बात यह है कि अर्थ और काम के सेवन का सम्बन्ध अन्य तीनों आश्रमों में न होकर केवल गृहस्थाश्रम के साथ हैं वय, तप, त्याग और अहर्निश परोपकार-परायण जीवन बिताने के कारण संन्यास का दर्जा बेशक सबसे ऊँचा है किन्तु ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास ये तीनों आश्रम जिस एक आश्रम की बदौलत चल पाते हैं, वह केवल गृहस्थ आश्रम है। '**गुरुकुल-दर्शन**' के पाठकों हेतु आचार्य रामदेव जी द्वारा लिखित '**गृहस्थ धर्म**' में वर्णित ज्ञान को पहुँचाने के लिए इस श्रृंखला को आरम्भ कर रहा है जिससे पाठक गृहस्थ धर्म से जुड़े अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें।*

लेखक परिचय : आचार्य रामदेव जी का जन्म 31 जुलाई 1881 को ग्राम बजवाड़ा (महात्मा हंसराज जी का गांव), होशियारपुर में हुआ था। इन्होंने व्यक्तिगत रूप से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंग्रेजी मुखपत्र 'आर्य पत्रिका' का सम्पादन किया। आचार्य जी हिन्दी और अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक, वक्ता और विद्वान् थे। उनकी टक्कर का व्याख्याता और विद्वान् विरला ही पैदा होता है। आपने जालंधर छावनी स्थित विक्टर हाईस्कूल में हैड मास्टर के पद को सुशोभित किया, साथ ही जींद में विद्यालय निरीक्षक के रूप में भी कार्य किया। महात्मा मुंशीराम जी के अनुरोध पर आप गुरुकुल कांगडी को जीवन दान करके गुरुकुल के हो गये और 1936 में आप स्वर्ग सिधारे। 'गृहस्थ-धर्म' में आपने गृह्यसूत्रों के आधार पर गृहस्थ धर्म का जैसा सांगोपांग विवेचन किया है, वह न केवल पठनीय है, बल्कि सही दिशा दिखाने वाला है। वैदिक धर्म ने गृहस्थ धर्म के पालन के लिए जैसा निर्देश दिया है, उसके अनुसार यदि समस्त मानव जाति आचरण करने लग जाए तो निस्सन्देह वह आज की अपेक्षा कहीं अधिक सुखी होगी।

गतांक से आगे...धर्म कार्यो के सम्पादन में पत्नी स्वतंत्र नहीं है, अर्थात् जो धर्म कार्य पत्नी करे वह पति के साथ करे।
(गौतम अध्याय 17, सूत्र1)

ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी जब विवाह के लिए वर-वधू बनते हैं और उनका विवाह संस्कार होने लगता है तो उपस्थित सभा के बीच उन्हें परस्पर अनेक प्रतिज्ञाएं करनी पड़ती थीं जिन प्रतिज्ञाओं में से कतिपय निम्नलिखित हैं-

''हे वरानने! मैं ऐश्वर्य सुसन्तानादि सौभाग्य की बढ़ती के लिए तेरे हाथ को ग्रहण करता हूँ। मुझ पति के साथ जरावस्था को प्राप्त होकर भी सुखपूर्वक निवास कर।

हे वीर ! मैं सौभाग्य की वृद्धि के लिए आपके हस्त को ग्रहण करती हूँ। आप मुझ पत्नी के साथ वृद्धावस्था पर्यन्त प्रसन्न और अनुकूल रहिए। आपको मैं और मुझको आप आज से पति-पत्नी भाव करके प्राप्त हुए हैं। सकल ऐश्वर्यर्ययुक्त, न्यायकारी, सब जगत् की उत्पत्ति का कर्ता, बहुत प्रकार जगत् का धर्ता परमात्मा और ये सब सभा-मण्डप में बैठे हुए विद्वान् लोग गृहस्थाश्रम कर्म के अनुष्ठान के लिए तुझको मुझे देते हैं। आज से मैं आपके हस्ते और आप मेरे हस्ते बिक चुके हैं, कभी एक-दूसरे का अप्रियाचरण नहीं करेंगे।

हे अनघे! धर्म युक्त मार्ग में प्रेरक मैं तेरे हाथ को ज्ञानपूर्वक ग्रहण कर चुका हूँ जिस जगत् पति परमात्मा ने तुझको मुझे दिया है, उसकी कृपा से सौ वर्ष पर्यन्त तू सुखपूर्वक मुझ पति के साथ जीवन धारण कर।

हे भद्रवीर! परमेश्वर की कृपा से आप मुझे प्राप्त हुए हो। मेरे लिए आपके सिवाय इस जगत में दूसरा पति नहीं है न मैं आप से अन्य दूसरे को मानूंगी, मैं प्रेम द्वारा आपको प्राप्त होती हूँ, ज्ञानपूर्वक आपको ग्रहण करती हूँ। आपका हृदय, आत्मा और अन्त:करण मेरे प्रियाचरण धर्म में धारण करती हूँ, मेरे चित्त के अनुकूल आपका चित्त सदा रहे। आप एकाग्र होकर मेरी वाणी का जो कुछ मैं आपसे कहूँ, उसका सेवन सदा किया कीजिए क्योंकि आज से प्रजापति परमात्मा ने आपको मेरे अधीन किया है इत्यादि।''

इसके विरुद्ध यूरोप में स्त्री-पुरुष का सम्बंध आर्योचित उच्चोद्देश्यों के साथ नहीं होता जिस कारण बहुत से विवाह बन्धन विच्छेद हो जाते हैं। सूत्रग्रन्थों में कई जगह लिखा है कि स्त्री स्वतंत्र नहीं प्रत्युत् वह पुरुष के आधीन है यथा -

(स्त्री की रक्षा) उसका पिता उसकी बाल्यावस्था में करता है, युवावस्था में पति रक्षा करता है, वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करता है, स्त्री कभी भी स्वतंत्रता के योग्य नहीं है। (वासिष्ठ, अध्याय 5, सूत्र 2) परन्तु वह आधीनता किस प्रकार की है, इसे समझने के लिए निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान देना चाहिए। उसी वासिष्ठ सूत्र में लिखा है -

वेद में ऐसा वर्णन किया है कि वह नारी जो नग्न नहीं फिरती

बहुत से विचारों वाला नहीं बल्कि एक निश्चय वाला महान् बनता है।

(अर्थात् जो बाल्यावस्था को समाप्त कर चुकी है) और जिसमें अपकालिक अल्प पवित्रता भी नहीं है, स्वर्गवत् है।

(वासिष्ठ, अध्याय 5, सूत्र 1)

बाल्यावस्था में कन्याओं की रक्षा उसके पिता-माता तथा जब वह गुरुकुल में पढ़ने जाती थीं तो उसकी रक्षा उनकी आचार्या करती थीं, सो तो ठीक ही थी। कन्या युवावस्था को प्राप्त हो विवाह कर जब पतिकुल को जाती थी तब भी वह निकृष्ट दासी व अप्रतिष्ठित नहीं मानी जाती थी प्रत्युत् वह महती प्रतिष्ठा वाली समझी जाती थी जिसका प्रमाण यह है कि वासिष्ठ सूत्र अध्याय 13, सूत्र 59 तथा 60 में जहाँ यह लिखा है कि ''यदि एक ही सड़क पर सम्मुख आते हुए राजा को स्नातक ब्रह्मचारी मिले तो राजा को चाहिए कि स्नातक ब्रह्मचारी को (मान्य देने के लिए) मार्ग दे दे वहाँ यह भी लिखा है कि (राजा और स्नातकादि) सब लोग (मान्य देने के लिए) उस विवाहिता वधू के लिए मार्ग छोड़ दें जो (सवारी पर पितृगृह से) पति गृह को ले जायी जाती हो।''

पति के साथ रहती हुई स्त्री उसकी निकृष्ट दासी नहीं प्रत्युत उसकी अर्धांगिनी समझी जाती थी, पति-पत्नी की रक्षा में रहता था और पत्नी पति की रक्षा में रहती थी। पति की पूरी रक्षा न रहने के काण किसी कुसंगवश यदि पत्नी कभी मदिरा पान कर लेती थी, वह घोर पतित समझी जाती थी और माना जाता था कि पति का आधा शरीर पतित हो गया और अब आधा शरीर रखने के कारण वह किसी काम का न रहा यथा-

पति का आधा अंग टूट कर गिर पड़ता है यदि उसकी पत्नी उसकी पत्नी मदिरा पान करती है। (वासिष्ठ अध्याय 21, सूत्र 15)

पत्नी जब पुत्रवती हो जाती थी और उसके पुत्र प्रौढ़ हो जाते थे तो माता उन पुत्रों की दासी की भांति नहीं रहती थी प्रत्युत पुत्रों की सर्वोत्तम पूज्यदृष्टि माता की ही ओर होती थी। यथा -

उपाध्याय की अपेक्षा दशगुणा अधिक प्रतिष्ठित आचार्य है, आचार्य से सौ गुणा अधिक प्रतिष्ठित पिता है और पिता के सहस्र गुण अधिक प्रतिष्ठा योग्य माता है। (वासिष्ठ अध्याय 13, सूत्र 48)

अत: जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं वासिष्ठ सूत्र अध्याय 5, सूत्र 2 का अर्थ यह हुआ कि स्त्री की सर्वोपरि रखा, उसकी बाल्यावस्था में पिता मातादि, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र तत्पर रहें और उसको स्वतंत्र व अकेली व असहायावस्था में न छोड़े?

उक्त सूत्रों के अतिरिक्त निम्नलिखित आपस्तम्ब सूत्रों से भी पति और पत्नी के धर्म तथा उसके समानाधिकार स्पष्ट ज्ञात होते हैं -

पति और पत्नी के बीच विभाजन नहीं हो सकता (अर्थात् उनका विवाह बन्धन किसी भी प्रकार टूट नहीं सकता अथवा गृहसम्पत्ति को वे आपस में बांट नहीं सकते) क्योंकि विवाहकाल से ही वे धार्मिक कार्यों के लिए युक्त होते हैं, वह सब कर्म जिनसे आत्मिक योग्यताएं प्राप्त होती है, उनके फल भी दोनों को ही मिलते हैं, इसी प्रकार जो ऐश्वर्य प्राप्त होता है, उसमें भी उनका युक्ताधिकार है क्योंकि (विद्वानों का) कथन है कि पति की अनुपस्थिति में यदि पत्नी द्रव्य का व्यय करे तो यह चोरी नहीं समझी जाती।

(आपस्तम्ब सूत्र, प्रश्न 2, पटल 6, खण्ड 14, सूत्र 17, 18, 19, 20)

पति और पत्नी दोनों ही युक्त सम्पत्ति पर अधिकार रखते हैं (अर्थात् सम्पत्ति दोनों की समझी जाती है)

(आपस्तम्ब सूत्र, प्रश्न 2, पटल 11, खण्ड 29, सूत्र 3)

यदि विवाह समय की प्रतिज्ञाएँ टूटेंगी तो पति और पत्नी दोनों ही निश्चय करके नरक में गिरेंगे।

(आपस्तम्ब सूत्र, प्रश्न 2, पटल 10, खण्ड 27, सूत्र 6)

यह सूत्र स्पष्ट बताता है कि विवाह बन्धन धर्मबन्धन समझा जाता था और जिस प्रकार धर्म किसी दशा में भी त्याज्य नहीं उसी प्रकार विवाह बन्धन भी किसी दशा में टूटने योग्य नहीं था।

कदाचित् किसी कारण यदि कोई पुरुष अपनी सदाचारिणी स्त्री को त्यागता था तो वह स्त्री पतित नहीं मानी जाती थी प्रत्युत वह पुरुष ही पतित माना जाता था और जब तक वह अपने इस पाप का प्रायश्चित नहीं कर लेता था तब तक वह घृणित पुरुष ही कहलाता था। पत्नी त्याग का प्रायश्चित यह था -

'जिसने अपनी पत्नी को अन्याय से त्याग दिया है वह गधे का चमड़ा ओढ़ कर (चमड़े के बाल ऊपर की ओर रहें) प्रतिदिन सात गृहों में यह कहते हुए भिक्षा मांगे कि उस पुरुष को भिक्षा दो जिसने अपनी पत्नी को त्याग दिया है। इसी प्रकार की भिक्षा से वह छह महीने तक अपना जीवन निर्वाह करे।'

(आपस्तम्ब प्रश्न 1, पटल 10, खण्ड 28, सूत्र 19)

इसी प्रकार जो स्त्री कदाचित् अपने सदाचारी पति को छोड़ती थी तो वह भी पतित समझी जाती थी और जब तक वह इस पाप का प्रायश्चित नहीं कर लेती थी तब तक अति घृणित मानी जाती थी। इस अपराध के लिए पत्नी के लिए भी प्रायश्चित था -

यदि कोई स्त्री अपने पति को छोड़े तो द्वादश दिनों वाला कृच्छ व्रत छह महीने तक करना पड़ेगा।

(आपस्तम्ब प्रश्न 1,पटल 10, खण्ड 28, सूत्र 20)

संसार में मनुष्य कल्याण सम्बंधी जितने नियम चलाए जाते हैं उनकी उत्तमता व निकृष्टता उस परिणाम से सिद्ध होती है जो उक्त नियम किसी मनुष्य समाज में प्रकट करते हैं। पति और पत्नी के परस्पर सम्बंध को प्राचीन आर्यो ने भली -भांति समझकर उसे इस प्रकार चलाया था जिससे उस समय के आर्यगृह स्वर्ग स्थान बन रहे थे। पति और पत्नी के बीच ऐसा गाढ़ा प्रेम रहता था कि व्यभिचारी पुरुष व व्यभिचारिणी स्त्री का नाम कठिनता से सुन पड़ता था जिसका प्रमाण छान्दोग्योपनिषद् में भी विद्यमान है। ... **(क्रमश:)**

सबसे महान वह है जो दृढ़तम निश्चय के साथ सत्य का अनुसरण करता है।

सब मनुष्यों के पालनीय सत्य धर्म का निश्चय और असत्य मतों का त्याग

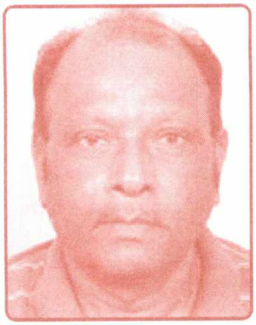

मनमोहन आर्य

मनुष्य संसार की सर्वोत्तम कृति है। मनुष्य से बढ़कर संसार की कोई रचना नहीं है। इस मान्यता व सिद्धान्त को प्राय: सभी लोग निर्विवाद रूप से स्वीकार करते हैं। इस संसार में विद्यमान अपौरुषेय रचनाओं पर विचार करने पर बुद्धि असमंजस में पड़ जाती है। इस संसार व जगत् का आधार क्या है? संसार के सभी मनुष्य इस प्रश्न का अपनी-अपनी बुद्धि, ज्ञान व योग्यता के अनुसार उत्तर देंगे जिनमें कुछ उत्तर समान व अनेकों भिन्न हो सकते हैं। वेदों में तो इन प्रश्नों के उत्तर मिलते ही हैं, परन्तु यदि वेदों का न जानने वाले लोग दर्शन ग्रन्थ ही पढ़ लें तो उन्हें विदित होगा कि जिस सत्ता से यह संसार व इसके सभी पदार्थ जिसमें मनुष्य आदि सभी प्राणी भी सम्मिलित हैं, उत्पन्न हुए हैं, जो इस संसार का उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता, संचालनकर्ता तथा यथासम्भव संहार-प्रलयकर्ता है, उसे ईश्वर कहते हैं। वैशेषिक दर्शन में ईश्वर के विषय में बहुत तर्कसंगत व युक्तियुक्त विचार दिये गये हैं जिनसे ईश्वर के सत्य स्वरूप का निर्णय करने में सहायता मिलती है।

हम सब जानते हैं कि कोई भी ज्ञान से पूर्ण रचना किसी बुद्धिमान व ज्ञानी रयचिता के बिना नहीं हुआ करती है। संसार में ऐसा एक भी जड़ व चेतन पदार्थ, सत्ता या प्राणी नहीं है जो स्वयंमेव, बिना अन्य किसी की सहायता के बना हो। अत: रचना के लिए रचयिता की आवश्यकता अपरिहार्य होती है रचना दो प्रकार की होती है- एक जो मनुष्यों व इतर प्राणियों के द्वारा होती है और दूसरी वह जिसे मनुष्य व अन्य कोई प्राणी स्वयंमेव नहीं कर सकते। संसार में जड़ व चेतन दो प्रकार के पदार्थ विद्यमान हैं जिन्हें जड़ व चेतन नाम से सभी जानते हैं। जड़ पदार्थ में ज्ञान, बुद्धि व चेतन तत्त्व न होने के कारण यह स्वयं विचार नहीं सकते और न स्वयंमेव कुछ उपयोगी बनते हैं। इनकी सहायता से मनुष्य व अन्य प्राणी अपने प्रयोजन व अपने स्वाभाविक एवं नैमित्तिक ज्ञान के आधार पर रचनाएँ करते हैं। मनुष्य पहाड़, नदी, नाले, वृक्ष, वनस्पति व सूर्य, चन्द्र और ब्रह्माण्ड के अन्य पिण्डों को उत्पन्न व उनकी रचना नहीं कर सकता। यह कार्य जो मनुष्यों व अन्य किन्हीं प्राणियों के द्वारा सम्भव नहीं है, यह अपौरुषेय सत्ता के द्वारा किया जाता है और उसी सत्ता को ईश्वर, परमेश्वर, जगतिपति, सृष्टिकर्ता, संसार का राजा, न्यायाधीश, आचार्य व गुरु आदि नामों से जाना जाता है। यह समस्त संसार उस परमेश्वर की ही रचना है। जिस प्रकार एक कवि कविता या काव्य की रचना करता है, उसी प्रकार से यह जगत् व संसार ईश्वर रूपी कवि का काव्य है।

ईश्वर के विषय में हम महर्षि दयानन्द जी के विचारों से अवगत कराना चाहते हैं जो वेद, दर्शन, उपनिषदों व अन्य आर्ष ग्रन्थों पर आधारित है। वह लिखते हैं कि 'ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।' विचार करने पर ईश्वर का यह स्वरूप ही सत्य, यथार्थ, तर्क और युक्तिसंगत, ज्ञान व विज्ञान से पुष्ट तथा निर्भ्रान्त सिद्ध होता है। इसके विपरीत मत-मतान्तरों में जो कुछ कहा व बताया जाता है वह सत्य और यथार्थ न होकर असत्य व मिथ्या प्राय: ही होता है।

पूर्व पंक्तियों में हमने संसार व इसके रचयिता के बारे में विचार किया है। अब हम संसार के विभिन्न प्राणियों के विषय में विचार करते हैं। मनुष्य भी अन्य प्राणियों की तरह एक प्राणी है। मनुष्य जड़ पदार्थ न होकर एक जड़ शरीर वाला प्राणी है जिसमें एक ससीम, अणु परिमाण वाला चेतन तत्त्व जिसे आत्मा व जीवात्मा कहा जाता है, विद्यमान है। विचार करने पर यह भी ज्ञात होता है कि सभी शरीरों में भिन्न-भिन्न आत्मायें हैं जिसका कारण सभी मनुष्यों के विचारों व क्रियाकलापों में अन्तर होना है। विचार, चिन्तन व विवेचन करने व शास्त्रों के प्रमाणों के अनुसार सभी प्राणियों में जो चेतन पदार्थ के रूप में जीवात्मा है वह सब अस्तित्व व सत्ता की दृष्टि से समान है। यदि अन्तर है तो उनके अतीत के कर्मो व गुण, कर्म व स्वभावों के कारण है। यदि जीवात्मा के स्वरूप पर विचार करें तो यह चिन्तन व विचार तथा शास्त्रों के वर्णन के अनुसार चेतन पदार्थ, अल्पज्ञ, एकदेशी, असीम, अनादि, अमर, अविनाशी, अजर, नित्य, जन्म-मरण धर्मा, उपासना आदि साधनों व मनसा, वाचा, कर्मणा, पवित्रता व ईश्वर प्रणिधान द्वारा मोक्ष को प्राप्त होकर असीम सुख भोगता है। मनुष्य व अन्य प्राणियों के रूप में उनकी यह मोक्ष की यात्रा है जो जीवात्मा मनुष्य योनि को प्राप्त होकर ज्ञान की खोज व प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील होता है उसका अंतिम मुकाम वेद व वैदिक ज्ञान ही होता है जिससे वह इस संसार व अपनी आत्मा को यथार्थ रूप में जानकर

एक चुनौती का जीतकर आप दूसरी के लिए अधिक तैयार हो जाते हैं।

वैदिक-कर्मोपासना व ईश्वरोपासना अथवा विद्या आदि से ईश्वर का साक्षात्कार कर जीवनमुक्त होकर मोक्ष को प्राप्त करता है।

धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष ही जीवन के चार मुख्य व प्रमुख लक्ष्य हैं। भोजन, धन, परिवार, निवास व यात्रा के साधन कार, वायुयान, रेलगाड़ी आदि मोक्ष की जीवनयात्रा के साधन हैं, साध्य नहीं हैं। साध्य तो ईश्वर की प्राप्ति व उसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति ही है। जो मनुष्य जीवन में अपने इस साध्य को जान लेता है और इसके अनुरूप ही जीवनयापन व कर्म करता है, वह ही वस्तुतः मनुष्य, आर्य, साधक, योगी व धार्मिक पुरुष होता है। अन्यों को मनुष्य व धार्मिक पुरुष आदि के रूप में जानना व मानना हमारी दृष्टि में दोषपूर्ण व अनुचित है।

ईश्वर व जीवात्मा के विषय में हमने कुछ चर्चा की व जीवन के लक्ष्य व मोक्ष का भी उल्लेख किया है। मोक्ष क्या है, यह भी जान लेते हैं। हम सब जानते हैं कि हमारा मनुष्य आदि किसी भी प्राणी योनि में जन्म हो, हमें पूर्ण सुख व आनन्द की उपलब्धि व प्राप्ति नहीं होती। शरीर का धर्म ही वृद्धि व ह्रास एवं क्षय को प्राप्त होना है। शरीर को स्वास्थ्य की अनेक अवस्थाओं से गुजरना होता है जिसमें अनेक प्रकार के दुःख भी आते हैं। त्रिविध दुःख जो कि आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक दुःख कहलाते हैं, यह सभी प्राणियों में समय-समय पर आते-जाते रहते हैं। इन दुःखों से मनुष्य क्लेश को प्राप्त होता है और इसके साथ अभिनिवेश क्लेश के रूप में मृत्यु का दुःख हर क्षण हर पल उसके साथ रहता ही है। मृत्यु कभी भी आ सकती है और कारण कुछ भी बन सकता है। कई लोग तो जन्म के कुछ समय बाद ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। ऐसे भी हैं जो गर्भ में ही अनेक कारणों से मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

हमने देखा है कि महर्षि दयानन्द ने संसार का उपकार व सभी लोगों को कल्याण करने की दृष्टि से कार्य किया परन्तु उन्हें भी अनेक बार विष दिया और अन्त में वह विरोधियों के षडयंत्रों का शिकार हो गये। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि हमारा किसी भी योनि में जन्म होगा तो हमें दुःख अवश्य ही आयेंगे। इनसे बचने के लिए प्रयत्न करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। जिन कर्त्तव्यों का पालन करने से मनुष्य को जन्म-मरण से अवकाश मिलता है वह सभी कर्म धर्म संज्ञक होते हैं। ऐसा ही शास्त्रों व ऋषियों का कथन है। मोक्ष में जीवात्मा जन्म व मरण से मुक्त होकर बिना जन्म लिये ईश्वर के सान्निध्य में सुदीर्घ अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक सुख व आनन्द को भोगता है और इस अवधि में उसका जन्म नहीं होता। इसी के लिए हमारे सभी ऋषि, योगी व महापुरुष अतीत काल में प्रयत्न करते रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने इसे अत्यन्त सरल, सुबोध व सुलभ बना दिया है। सत्यार्थप्रकाश और उनके अन्य ग्रन्थों को पढ़कर मोक्ष का स्वरूप व उसके साधनों का ज्ञान प्राप्त कर यथोचित साधना करने से साध्य व लक्ष्य मोक्ष की और बढ़ा जा सकता है व उसे प्राप्त किया जा सकता है।

महान् व्यक्तियों का सर्वस्व अलौकिक ही होता है।

धर्म उसे कहते है जिससे मनुष्य के जीवन में अभ्युदय नाम से जाने जाने वाली यथार्थ उन्नति हो और मृत्यु के बाद निःश्रेयस अर्थात् मोक्ष प्राप्त होता है। इसका अर्थ है कि इस जन्म में भौतिक व सामाजिक उन्नति करते हुए मोक्ष का भी ध्यान रखना है। मोख प्राप्ति के जो विघ्न हैं, उन्हें जानकर उन कर्मो से बचना है। यदि हम असत्य का व्यवहार करेंगे तो निश्चित ही मोक्ष में बाधक होगा। ईश्वर सत्यस्वरूप है। वह असत्य को पसन्द नहीं करता। असत्य कर्म पापकर्म कहलाते हैं जो सामाजिक व्यवस्था सहित ईश्वर से भी दण्डनीय होते हैं। ईश्वरीय दण्ड का अर्थ है मनुष्यों व प्राणियों को दुःखों की प्राप्ति। इसीलिए मनु महाराज ने मनुस्मृति में मनुष्यों को समझाते हुए कहा है कि -'धर्म जिज्ञासानां प्रमाणं परम श्रुति' अर्थात् धर्म की जिज्ञासा होने पर जिज्ञासु को उसका समाधान वेद से करना चाहिए। धर्म किसी मनुष्य की निजी शिक्षाओं व मान्यताओं का नाम नहीं है। आजकल देश व संसार में जितने भी धर्म नाम से मत प्रचलित हैं, वह सब मनुष्यों द्वारा आरम्भ किये गये हैं। मनुष्य अल्पज्ञ होता है, अतः सर्वांश में असत्य से रहित सत्य का ज्ञान तो उसे होता है और न ही वह दूसरों को करा सकता है।

इसके अतिरिक्त ऋषि व योगीजनों से इतर कोटि के महापुरुष कहे जाने वाले अपने धर्माचार्यो का उनके अनुयायियों द्वारा चाहे कितना भी प्रचार कर लिया जाये, चाहे संसार में उनके करोड़ों व अरबों अनुयायी भी क्यों न बन जायें व हों, तथापि वह अल्पज्ञ मनुष्य ही थे और उनमें अविद्या व अज्ञान सहित काम, क्रोध, लोभ, मोह, इच्छा व द्वेष आदि भी रहे थे। हो सकता है कि किसी महापुरुष में कम हों व किसी में अधिक परन्तु मनुष्य व महापुरुष होकर भी इनसे बचा नहीं जा सकता। इसके लिए तो मनुष्य को वेदों का विद्वान्, योगी व ऋषि होना परमावश्यक है। ऐसे केवल हमारे प्राचीन ऋषि व लगभग डेढ़ शताब्दी पूर्व महर्षि दयानन्द जी ही हुए हैं। महर्षि दयानन्द ने ईश्वरीय ज्ञान -चार वेद यथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का संस्कृत व आर्यभाषा हिन्दी में सरल भाष्य व व्याख्यान किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थ भी दिये हैं। उनके ग्रन्थों को वेदों के व्याख्यान व सत्य को उद्घाटित करने वाले धर्म ग्रन्थ कह सकते हैं।

संसार में वैदिक साहित्य और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की तुलना में जितने भी ग्रन्थ हैं उनमें प्रायः अविद्या विद्यमान है जिसका दिग्दर्शन महर्षि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में किया व कराया

है। अत: सत्य धर्म के ग्रन्थों की चर्चा करें तो इनमें ईश्वरीय ज्ञान वेद सहित सभी दर्शनों, उपनिषदों , वेदानुकूल व प्रक्षेपरहित मनुस्मृति सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि ग्रन्थ सम्मिलित किये जा सकते हैं। जो मनुष्य ग्रन्थों का अध्ययन कर इनके अनुकूल अपना कर्त्तव्य निर्धारित कर आचरण करेगा, वही सच्चा धार्मिक कहला सकता है। नाना प्रकार के ग्रन्थों के पढ़ लेने व उनका विद्वान् होने से कोई धार्मिक नहीं कहला सकता अपितु वेद व वैदिक साहित्य के अनुकूल आचरण परमावश्यक है, जैसा कि श्रीराम, श्रीकृष्ण, प्राचीन ऋषियों, योगियों व महर्षि दयानन्द एवं उनके प्रमुख कुछ शिष्यों का था।

वैदिक साहित्य के विपरीत जो ग्रन्थ हैं व उनमें जो अविद्यायुक्त कथन है, वह धर्म न होकर असत्य मत ही कहे जा सकते हैं जिनका त्याग किया जाना मनुष्य जीवन को लक्ष्य पर पहुँचाने के लिए अपरिहार्य है। जो ऐसा नहीं करेगा वह इस जन्म में आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से भले ही कुछ सुखी व समृद्ध हो जाये परन्तु शास्त्राध्ययन यह बताता है कि वह कालान्तर में इस जन्म में भी दु:ख पा सकता है और भावी जन्म उसके इस जन्म के शुभ व अशुभ कर्मो के अनुसार होंगे जिसमें उसे अपने पापों के दु:ख भोगने के लिए निकृष्ट प्राणी योनियों में भी जाना पड़ सकता है।

हम इस लेख द्वारा सभी बन्धुओं को यही प्रेरणा करेंगे कि दूसरे अविद्याग्रस्त लोगों को देखकर स्वयं का जीवन उनके अनुकूल न बनायें और इस जन्म व भावी जन्मों में उन्नति व मोक्ष की प्राप्ति के लिए ऋषि दयानन्द के जीवन व सिद्धान्तों को जानकर उनका अनुकरण व अनुसरण करें। हमने सत्य धर्म का निश्चय करने और असत्य मतों का त्याग करने के विषय में जो कुछ लिखा है वह सत्य शास्त्रों के अध्ययन व अपने विवेक से लिखा है। इसमें पक्षपात नहीं है। इसको मानना या न मानना सभी मनुष्यों का अपना अधिकार है। हम जैसे कर्म व आचरण करेंगे, कम से कम वैसा व उतना व कुछ अधिक ही भरेंगे। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं जैसा हम बोयेंगे, वैसा ही काटेंगे। बबूल का पेड़ बोकर आम प्राप्ति की इच्छा नहीं करनी चाहिए। करेंगे भी तो आम तो मिलने से रहे। आइए, वेदाध्ययन का व्रत लें और अभ्युदय और मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग के पथिक बनें।

आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्रवेश सूचना

आर्यसमाज अपने स्थापना काल से ही सामाजिक रूढ़ियों, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुड़मवाद पर कड़ा प्रहार करता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहाँ तपस्वी विद्वानों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर भारतीय संस्कृति के आधार वेद का प्रचार-प्रसार करने में अपनी कोई लाभ-हानि नहीं देखी, वहीं गीत, भजन व उपदेश के माध्यम से दादा बस्तीराम जी, चौधरी पृथ्वीसिंह बेधड़क जी, मंगल वैद्य जी, स्वामी भीष्म जी जैसे अनेक भजनोपदेशकों ने अपनी जान हथेली पर रख कर वेद का प्रचार-प्रसार किया।

आचार्य देवव्रत जी महामहिम राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश के मन में हमेशा से ही यह भाव रहा है कि गाँव, देहात में वेद का प्रारम्भिक प्रचार भजनोपदेशक के माध्यम से जितना कारगर हो सकता है उतना अन्य से नहीं। इसी भावना को मन में रखते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में '**आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**' की स्थापना की गई है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत् प्रशिक्षण 01 **अप्रैल** 2017 से प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति है उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क रहेगी। प्रशिक्षण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें :-

निवेदक -
कुलवंत सिंह सैनी,
प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र

सम्पर्क सूत्र -
नन्दकिशोर आर्य, प्राध्यापक संस्कृत
मो : 94664 36220, 86890 01220

आक्रमण करने से भी महान् व्यक्ति शत्रुओं के वश में नहीं आते।

समसामयिकी स्मरणिका

प्रश्न : हाल ही में किस प्रदेश सरकार ने विद्यालयों में योग की शिक्षा को अनिवार्य किया है?

उत्तर : उत्तर प्रदेश।

प्रश्न : किस प्रदेश सरकार ने गरीबों हेतु दीनदयाल रसोई योजना का शुभारम्भ किया?

उत्तर : मध्य प्रदेश।

प्रश्न : राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने 7 अप्रैल 2017 को नई दिल्ली में किस विश्व स्वास्थ्य सम्मेलन का उद्घाटन किया?

उत्तर : निमकेयर।

प्रश्न : 64वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में किस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म घोषित किया गया?

उत्तर : नीरजा।

प्रश्न : भारत के किस खिलाड़ी ने बैंकॉक में विश्व युवा भारोत्तोलन प्रतियोगिता में रजत पदक जीता?

उत्तर : जेरेमी लालरिननुंगा।

प्रश्न : किस भारतीय क्रिकेटर को वर्ष 2016 के लिए 'विजडन क्रिकेटर ऑफ द ईयर' चुना गया?

उत्तर : विराट कोहली।

प्रश्न : वित्त अधिनियम 2017 के माध्यम से सरकार ने कितने लाख रुपये से अधिक के लेन-देन पर प्रतिबंध लगा दिया?

उत्तर : दो लाख।

प्रश्न : हाल ही में किस प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका का निधन हुआ।

उत्तर : किशोर आमोनकर, 3 अप्रैल 2017 को निधन हुआ।

प्रश्न : उत्तराखण्ड में वन अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित 19वां राष्ट्रमंडल वानिकी सम्मेलन की थीम क्या रही?

उत्तर : समृद्धि और भावी पीढ़ी के लिए वन।

प्रश्न : निर्वाचन आयोग ने आधुनिक इलेक्ट्रोनिक वोटिंग मशीन खरीदने का निर्णय किया, इनके साथ छेड़छाड़ करने पर यह काम करना बंद कर देगी, यह किस प्रकार की ईवीएम है?

उत्तर : एम 3 ।

प्रश्न : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की सबसे लम्बी सुरंग का उद्घाटन किया, इसका क्या नाम है?

उत्तर : चेनानी -नाशरी टनल।

प्रश्न : राष्ट्रपति ने किस शहर में रवीन्द्र भवन और हज घर की आधारशिला रखी?

उत्तर : रांची।

प्रश्न : वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के नये नियम के तहत कितने करोड़ रुपये से अधिक की टैक्स चोरी को गैर-जमानती अपराध की श्रेणी में रखा गया है?

उत्तर - पाँच करोड।

प्रश्न: कौन सा टाइगर रिजर्व अपना शुभंकर प्रस्तुत करने वाला भारत का पहला टाइगर रिजर्व बना?

उत्तर : कान्हा टाइगर रिजर्व

प्रश्न : कौन सा देश धातु खनन पर प्रतिबंध लगाने वाला विश्व का पहला देश बना ?

उत्तर : एल साल्वाडोर।

प्रश्न : उस भारतीय फॉरवर्ड खिलाड़ी का क्या नाम है जिन्हें 30 मार्च 2017 को एशियन हॉकी अवार्ड्स में प्लेयर आफ द ईयर चुना गया?

उत्तर : एस. वी. सुनील।

प्रश्न : अप्रैल 2017 से तम्बाकू वाले पान-मसाले व गुटखे पर उत्पाद शुल्क 10 प्रतिशत से बढ़ाकर कितना करने की घोषणा की. गई?

उत्तर : 12 प्रतिशत।

प्रश्न : नितिन ए गोखले एवं ब्रिगेडियर एस के चटर्जी द्वारा राष्ट्रीय राइफल्स पर लिखी गई पुस्तक का क्या नाम है?

उत्तर : होम ऑफ द ब्रेव।

प्रश्न: भारत की पहली वातानुकूलित रेल एम्बुलेंस सेवा कहाँ पर आरम्भ की गई

उत्तर : मुम्बई।

प्रश्न : उस महिला अधिकारी का नाम बताएं जिसे भारत की पहली महिला कॉम्बैट अधिकार के रूप में बीएसएफ में शामिल किया गया?

उत्तर : तनुश्री पारीख।

संकलन
कुलदीप मलिक
हिन्दी अध्यापक
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

मुसीबत में पड़े व्यक्ति से सहानुभूति रखने वाला भी महान् है।

भजन : दिव्य दर्शन

तुम्हारे दिव्य दर्शन की मैं इच्छा लेके आया हूँ।
पिला दो प्रेम का अमृत पिपासा लेके आया हूँ।।
रतन अनमोल लाने वाले लाते भेंट को तेरी।
मैं केवल आँसुओं की मंजुमाला लेके आया हूँ।।
जगत् के रंग सब झूठे तू अपने रंग में रंग दे।
मैं अपना यह महाबदरंग बाना लेके आया हूँ।।
प्रकाशानन्द हो जाये मेरी अन्धेरी कुटिया में।
तुम्हारा आसरा विश्वास आशा लेके आया हूँ।।

संस्कृत अनुवाद

तवेशं दिव्यदर्शेच्छा मनस्यानीयागतोऽहम्।
पायय प्रेम पीयूषं तृषामानीयागतोऽहम्।।
महार्घानि च रत्नानि जनाः लान्ति तवार्पितुम्।
नेत्रयोरश्रुपूरितमंञ्जुमालानीयागतोऽहम्।।
जगद्वर्णानृताः नूनं स्वरागे रंज ईश ! त्वम्।
स्वकीयं धूसररागं मनस्यानीयागतोऽहम्।।
रसज्योतिर्भवेन्नूनं तमोवृत्ते कुटीरे मे।
साहाय्यं च दृढोत्साहमाशानीयागतोऽहम्।।

अनुवाद : नन्दकिशोर आर्य,
संस्कृत प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

यज्ञ की महिमा

1. यज्ञ से ऐश्वर्य की वृद्धि होती है : **अथर्ववेद।**
2. मेरे राज्य में एक भी घर यज्ञ न करने वाला नहीं है : **राजा अश्वपति।**
3. बिना बुलाये भी यज्ञ में सम्मिलित होना चाहिए : **याज्ञवल्क्य स्मृति।**
4. बिना अग्निहोत्र (यज्ञ) के घर श्मशान तुल्य है : **आचार्य चाणक्य।**
5. यज्ञ से शरीर निरोग व बुद्धि विशुद्ध होती है : **महर्षि दयानन्द सरस्वती।**
6. सुखमय जीवन बनाने में यज्ञ भोजन से भी ज्यादा आवश्यक है : **स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, मेरठ।**
7. अग्निहोत्र (यज्ञ) प्राणिमात्र का जीवन दाता है : **स्वामी बलेश्वरानन्द सरस्वती।**
8. यज्ञ शेष खाने वाले अर्थात् यज्ञ करके भोजन करने वाले सब पाप वृत्तियों से छूट जाते हैं, लेकिन जो केवल अपने लिए ही पकाते हैं, वे मानों पाप खाते हैं : **गीता।**
9. हे कुरुश्रेष्ठ! यज्ञ न करने वाले का यह लोक भी सुखद नहीं होता तो अगले जन्म की बात ही क्या है : **गीता।**
10. सुख चाहने वाले को यज्ञ करना चाहिए : **ब्राह्मणग्रन्थ।**
11. यज्ञ श्रेष्ठतम् कर्म है : **शतपथ ब्राह्मण।**
12. अन्न से सब प्राणियों को जीवन मिलता है। अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है और वर्षा यज्ञ से होती है। यज्ञ कर्म से उत्पन्न होता है : **गीता।**

संकलन : भोपाल सिंह आर्य,
अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग गुरुकुल कुरुक्षेत्र

कविता : बेटा- बेटी एक समान

डॉ. श्यामलाल शर्मा,
हिन्दी प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

बेटा वारिस है तो बेटी पारस है।
बेटा वंश है तो बेटी अंश है।।
बेटा आन है तो बेटी शान है।
बेटा तन है तो बेटी मन है।।
बेटा मान है तो बेटी गुमान है।
बेटा संस्कार है तो बेटी संस्कृति है।।
बेटा राग है तो बेटी बाग है।
बेटा दवा है तो बेटी दुआ है।।
बेटा भाग्य है तो बेटी विधाता है।
बेटा शब्द है तो बेटी अर्थ है।।
बेटा गीत है तो बेटी संगीत है।
बेटा प्रेम है तो बेटी पूजा है।।
बेटा हौसला है तो बेटी चट्टान है।
बेटा-बेटी में नहीं अन्तर,
बल्कि एक समान है।।

भारतीय समाज पुरुष प्रधान है। इसमें पुरुषों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। बेटियों को मात्र '**खर्चा**' माना जाता है, इसलिए वे '**कामधेनु**' जैसी होती हुई भी '**बोझ**' मानी जाती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी बेटा-बेटी की समानता को समझें और उन्हें फलने-फूलने का समान अवसर दें। दोनों में से किसी के बिना '**सृष्टि-तंत्र**' नहीं चल सकता। दोनों में से किसी को भी कम मत आंके क्योंकि -

'रिश्तों का इतिहास है, रिश्तों का है भूगोल।
संबंधों के जोड़ का, बेटा-बेटी है फेवीकॉल।।'

महापुरुष की महत्ता इसी में है कि वह कदापि निराश न हो।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति के संरक्षण हेतु तत्पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र

वेद प्रचार विभाग द्वारा कुरीतियों पर कटाक्ष तथा जीवन निर्माण शिविरों में युवाओं को दिया जा रहा है आत्मरक्षा का प्रशिक्षण

कुरुक्षेत्र, 30 अप्रैल 2017 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र के संरक्षक एवं हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी द्वारा गुरुकुल के शताब्दी समारोह के समय लोगों को पुनः वेद मार्ग पर चलाने का जो संकल्प लिया गया था, एक आदर्श समाज और विकासशील राष्ट्र निर्माण का जो स्वप्न उन्होंने देखा था, वह अब साकार होने लगा है। शताब्दी समारोह के बाद गुरुकुल में बनाये गये वेद प्रचार विभाग के माध्यम से गुरुकुल कुरुक्षेत्र समाज में फैली नशाखोरी, छुआछूत, ऊंच-नीच की भावना, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, गुरुड़म तथा पाश्चात्य सभ्यता का अनुसरण आदि के प्रति तो लोगों को जागरूक कर ही रहा है साथ ही अपनी वैदिक सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान और दर्शन भी लोगों को करा रहा है।

गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी के कुशल मार्गदर्शन और वेद प्रचार अधिष्ठाता भोपाल सिंह आर्य के निर्देशन में आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य, जसविन्द्र आर्य व उनकी टीम प्रतिदिन गांव-गांव, घर-घर जाकर लोगों को वेदों की ओर लौटने व आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को अपनाकर देश को पुनः सोने की चिड़िया और विश्वगुरु बनाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं। गुरुकुल के वेद प्रचारक लोगों को हवन की महत्ता और हवन से होने वाले लाभ से परिचित करा रहे है साथ ही ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रतिदिन अपने घरों में हवन करने के लिए प्रेरित भी कर रहे हैं। गुरुकुल की इस मुहिम का असर भी स्पष्ट नजर आ रहा है और कुरुक्षेत्र, शाहाबाद, ईस्माइलाबाद, कैथल आदि क्षेत्रों में यज्ञ के प्रति लोगों की भावना, उनकी सोच, उनकी रुचि बढ़ी है। वहीं प्रधान व्यायाम शिक्षक समरपाल आर्य के नेतृत्व में गुरुकुल के व्यायाम शिक्षक चन्द्रपाल आर्य, सचिन आर्य, आर्यमित्र, विशाल आर्य, जयराम आर्य आदि विद्यालयों व महाविद्यालयों के आर्यवीर योग एवं जीवन निर्माण शिविरों का आयोजन कर युवाओं को योग, आसन, प्राणायाम के साथ-साथ आत्मरक्षा हेतु जूडो-कराटे, लाठी चलाना आदि का प्रशिक्षण दे रहे हैं जिससे युवा पीढ़ी शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनें।

वेद प्रचार विभाग के पिछले कुछ दिनों की प्रगति पर दृष्टि डालें तो भोपाल सिंह आर्य द्वारा कुरुक्षेत्र के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय झरौली, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छपरी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय माजरा, सैनी सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, बरगटथली, बाल भारती पब्लिक स्कूल अमीन, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बरोट, श्रीकृष्णा विद्या मंदिर शाहाबाद, मनीष पपनेजा बालिका महाविद्यालय, ईस्माइलाबाद, लिटल स्टार पब्लिक स्कूल पेहवा के अतिरिक्त कैथल के ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, गुरु ब्रह्मानन्द पब्लिक स्कूल व ज्ञान उदय पब्लिक स्कूल में यज्ञ व भजनोपदेश के कार्यक्रम सम्पन्न किये और छात्र-छात्राओं को वैदिक सभ्यता, संस्कृति व आर्य समाज के सिद्धान्तों की जानकारी दी।

वहीं कुरुक्षेत्र जनपद के गाँव लाठी धनौरा, समानी, रामपुरा, गजलाना, मकराना, अजरानी, हरीगढ़ भौरख, बाबैन, कतलारी, खानपुर खेड़ी, दूधला, सैक्टर -4 अर्बन एस्टेट, रायपुर, मेहरा, बरगटथली व शांतिनगर सहित कैथल जनपद के गाँव कौल, गौरा खेड़ी, खानपुर, फ्रेंडस कालोनी, क्योड़क, सीवन, जडौला, जगदीशपुरा, चन्दाना, जाखोली, मदूद, बरसाना में यज्ञ व भजनोपदेश का कार्यक्रम किया गया। इन कार्यक्रमों में ग्रामीण क्षेत्र के मौजिज लोगों ने बढ़चढ़कर भाग लिया। विशेष रूप से महिलाओं ने हवन के प्रति काफी रूचि दिखाई और यह पुनीत कार्य करने के लिए गुरुकुल के संरक्षक आचार्य देवव्रत व प्रधान कुलवंत सिंह सैनी का आभार भी व्यक्त किया।

आर्यवीर /वीरांगना योग एवं जीवन निर्माण शिविर की चर्चा करें तो वेद प्रचार विभाग के योग शिक्षकों ने कुरुक्षेत्र के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय छपरी, राजकीय उच्च विद्यालय ईस्माइलाबाद, राजकीय विद्यालय छपरा, निवेदिता सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, थानेसर, मनीष पपनेजा बालिका महाविद्यालय ईस्माइलाबाद, गुरुकुल छपरा, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुर्तजापुर, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय श्योंसर, पेहवा सहित कैथल के गांव मून्दड़ी स्थित गुरु ब्रह्मानन्द सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, घेरडू स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तथा जाजनपुर स्थित राजकीय विद्यालय में सात दिवसीय शिविर लगाकर युवाओं को शारीरिक व मानसिक रूप से मजबूत बनाने का कार्य किया।

लोगों में अच्छे विचार पैदा हो, आपस में बातचीत व चर्चा के मध्य अपशब्दों का प्रयोग न हो, बच्चें व युवा बुरी आदतों व संगति से दूर रहे इसके लिए भी गुरुकुल कुरुक्षेत्र प्रयासरत है और वेद प्रचार विभाग के माध्यम से ही गाँव-गाँव में पेंटर बलदेव जी द्वारा दीवार लेखन का कार्य किया जा रहा है। पिछले कुछ समय के मध्य बलदेव

माता-पिता, स्त्री-पुरुष -कोई भी त्याज्य योग्य नहीं है।

...शेष पृष्ठ 21 पर

चढ़ अग्निपंख उड़ गये राष्ट्रऋषि कलाम

सर्व दिशा-दिशान्तर से सीमावरत कोई भूभाग देश कहलाता हैं जब इस पर किसी पालन-अनुरक्षण कर्ता राजा या शासक का प्रकाश परिव्याप्त होता है तो वही भूभाग एक राज्य के रूप में परिणत हो जाता है, और इसमें जब प्रकृष्ट रूपेण संस्कारों से जन्म लेने वाली प्रज्ञा की पदचाप होती है, तभी इसे राष्ट्र का अमिधान मिलता है, क्योंकि निरन्तर दान करने वाले को '**रा**' कहा जाता है, जहाँ ये स्थित हों वहीं राष्ट्र कहलाता है। '**राती**' अर्थात् दानकर्ता परोपकारी तथा 'अराती' कृपण स्वार्थी कहलाते हैं। '**अग्निनीले पुरोहितम्**' (ऋग्वेद 1.1.1) अर्थात् सर्वाग्र हितकारी अग्नि की उपासना करने से ही कोई व्यक्ति मननकर्त्ता ऋषि बनता है।

'**अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिरीडयो नूतनैरुत**' (ऋग्वेद 1.1.2)

अर्थात् प्राचीन और अर्वाचीन सभी ऋषि अथवा चेतना सम्पन्न मानव अग्नि की उपासना करते चले आये हैं। विकास के सोपान दर-सोपान चढ़ने के लिए आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों की अग्नियाँ मनुष्य का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इस सम्पूर्ण चित्रण के अंतर्गत वर्तमान में कोई चित्र उभरकर नयनाभिराम बनता है, तो वह डॉ. अब्दुल कलाम का ही विचित्र व्यक्तित्व प्रत्यक्ष होता है। जो मनुष्य सब विद्याओं को पढ़के औरों को पढ़ाते हैं तथा अपने उपदेश से सबका उपकार करने वाले हैं व हुए हैं वे पूर्व शब्द से और जो कि अब पढ़ने वाले, विद्याग्रहण के लिए अभ्यास करते हैं, वे नूतन शब्द से ग्रहण किये जाते हैं और वे सब पूर्ण विद्वान् शुभगुण सहित होने पर ऋषि कहलाते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रस्तुत इस परिभाषा के अंतर्गत एक डॉ. कलाम ही क्या, डॉ. होमी जहांगीर भाभा तथा डॉ. विक्रम साराभाई प्रभृति अनेक राष्ट्रचेता ऋषि आ जाते हैं। रामायण काल की बात ही क्या! महाभारत काल से पूर्व तथा आर्यावर्त के अतिरिक्त विश्व में अन्यत्र कोई इतिहास नहीं मिलता। इन दोनों युगों में विश्वामित्र-परशुराम प्रभृति अनेक महान् ऋषियों का वर्णन मिलता है, जिनसे योद्धा राजकुमार अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा ग्रहण करते थे, उनमें प्रमुख आयुध प्रक्षेपणास्त्र ही हुआ करते थे।

'**कर्मयोगी कलाम**' ग्रन्थ से प्रो. अविज्ञात की यह पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं -'यदि भारत विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा पछाड़ा गया और इसलिए जीवन की दौड़ में पिछड़ गया तो इसका एकमेव कारण प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारी उपेक्षापूर्ण दृष्टि थी। यह नहीं कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हम अक्षम थे परन्तु हमारी दृष्टि कहीं और थी। वह सामरिक प्रौद्योगिकी, युद्धक प्रौद्योगिकी, लड़ाकू प्रौद्यागिकी पर नहीं थी। आधुनिक प्रौद्योगिकी का इतिहास हमें बताया है कि यह युद्ध-आधारित है। यह ठीक है कि प्रौद्योगिकी को नागरिक सुविधाओं तथा शान्तिपूर्ण विकास के लिए भी प्रयोग किया जाता है, परन्तु पहल युद्ध से होती है। पहले पत्थर मिसाइल की भांति आत्मरक्षा अथवा शिकार के लिए फेंके गये, चकमक पत्थर से आग की ईजाद बाद में हुई। पहले तीर-कमान बना, कमान की टंकार से इकतारे का संगीत बाद में सुना गया। पहले मिलिटरी इंजीनियरी बनी, सिविल इंजीनियरी बाद में आयी और फिर मैकेनिकल विद्युत इलैक्ट्रॉनिकी इसी क्रम में आयी। चाहे यह बाबर का तोपखाना रहा हो या अल्फ्रेड नोबल की बारूद हो या आज की परमाणु शक्ति तथा उपग्रह प्रक्षेपण- यह सभी प्रौद्योगिकी युद्ध के लिए पहले विकसित हुई, व्यापार तथा विकास के लिए उनका उपयोग बाद में हुआ। यही कहानी दूरभाष तथा सूचना प्रौद्योगिकी की है।

भारत शान्तिमय जीवन की अभिलाषा से ग्रस्त इन युद्ध तकनीकों के प्रति उदासीन रहा यही उसके गुलाम हो जाने तथा गुलाम ही बने रहने का कारण बना। अतः आत्मरक्षा के लिए नवीनतम प्रौद्योगिकी और शांतिपूर्ण विकास के लिए उसे परिस्थितयों के अनुकूल ढालकर विकसित की गई नवप्रवर्तनशील प्रौद्योगिकी को ही कलाम साहब इस महालक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपरिहार्य मानते हैं।'

प्रो. अविज्ञात लेखक के समक्ष दिन-प्रतिदिन विज्ञात रहे हैं और मेरे चिन्तन को नितप्रति परिमार्जित करते रहने के कारण मेरी प्रेरणा के संवाहक बने रहे हैं। डॉ. कलाम की उक्तानुसार क्रान्ति दृष्टि ही उन्हें राष्ट्र ऋषि की महनीयता प्रदान करती है। कोई भी वैज्ञानिक या क्रान्तिद्रष्टा शोध संवाहक अपनी प्रयोगशाला की परिधि में छिपा रहता है, राष्ट्र में उसके आविष्कार के प्रचार होने पर ही उसका परिचय हो पाता है। अपनी उपलब्धियों के अनेक राष्ट्रीय उपहार-अलंकरण प्राप्त करने के बाद भी सर्वांश में उनके विख्यात होने का श्रेय अलीगढ़ में पक्ष में जाना चाहिए, क्योंकि यह प्रक्रिया यहीं के एक प्रबुद्ध नागरिक श्री लक्ष्मण प्रसाद ने सन् 2000 ई. में राष्ट्र-स्तरीय नवाचार समारोह का भव्य आयोजन कर प्रारम्भ की। तबसे 2014 तक अनवरत यह दिवस अलीगढ़, लखनऊ एवं विदेश में भी उनके मित्र शिक्षाविद् डॉ. जगदीश गांधी के सौजन्य से अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर चुका है। जैसे डॉ. कलाम पदम् भूषण, पद्म विभूषण एवं भारत रत्न के अलंकरण से आलोकित होते रहे हैं, वैसे ही प्रसाद जो भी वयस्वी भूषण, वयस्वी गौरव से लेकर प्रान्तीय व राष्ट्रीय सम्मान विज्ञानरत्न आदि से विभूषित होते रहे हैं।

यह स्वाभाविक भी है- मेंहदी बाटनबारे को लगे मैहर्दी को रंग।' प्रसाद जी के प्रेरणा-प्रभाव में अलीगढ़ के अनेक शिक्षा केन्द्र संचालित हो रहे हैं। जहाँ सी. बी. गुप्ता सरस्वती विद्यापीठ की स्थापना के दूसरे वर्ष में ही डॉ. कलाम का पदार्पण होता है और ग्रामीण क्षेत्र में वे इसकी प्रगति व स्तर को देखकर प्रफुल्लित हो उठते

माता-पिता की सेवा पुत्र का प्रथम कर्त्तव्य है।

हैं, वहीं दूसरी शिक्षण संस्था-विजडम पब्लिक स्कूल प्रतिवर्ष डॉ. कलाम के जन्मदिवस 15 अक्तूबर को 'नवाचार दिवस' के रूप में वृहद् भव्यता के साथ मनाता चला आ रहा है। विद्यालय-प्रबंधन की जागरूकता प्रशंसनीय है। जब तक पूरे भारत को ठीक से पता भी नहीं चल पाया था कि डॉ. कलाम का हृदयाघात से निधन हो गया है, इस विद्यालय ने एएमयू सहित महानगर के शिक्षाविद्, उपकुलपतियों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों, समाजसेवियों की एक बड़ी सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि प्रदान की। संस्था के अध्यक्ष श्री पीके गुप्ता ने अपने अश्रुपूरित नेत्रों ने नया बना विशाल सभागार डॉ. कलाम के नाम समर्पित कर दिया।

सब जानते हैं कि डॉ. कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम् धनुषकोडी के परिवेश में एक निर्धन किन्तु स्वाभिमानी धर्मनिष्ठ परिवार में हुआ था। उन्हें कुरान और गीता दोनों ही प्रिय थे। वे तमिल, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाओं में दक्ष थे। स्वाभाविक है कि उन्होंने कुरान तमिल में पढ़ी होगी और गीता को उसकी मौलिक भाषा में पढ़ते होंगे। उनके उदारमना पिता जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम को नमाज पढ़ते समय ब्रह्माण्ड का एक हिस्सा बन जाते हो जिसमें दौलत, आयु, जाति या धर्म-पंथ का भेदभाव नहीं रहता।' कृष्ण की गीता का वाचक उनके पांचजन्य घोष के साथ-साथ उनके चक्रसुदर्शन एवं बांसुरी वादन पर विमोहित हुए बिना, भला कैसे रह सकता है! इसीलिए तो उन्हें प्रक्षेपणास्त्र के साथ-साथ रुद्रवीणा आकर्षित करती रही है।

उपसंहार पर आते हुए 'अग्निपंख' का स्पष्टीकरण समुचित प्रतीत होता है। डॉ. कलाम ने स्वयं ही अपनी आत्मकथा को विंग्स आफ फायर और इंग्नेटिड माइंड (अग्नि की उड़ान तथा तेजस्वी मन) नामक ग्रंथों के रूप में प्रकट किया है। अग्नि जो अग्रणी होती है, ज्ञान, गमन एवं प्राप्ति उसकी फलश्रुति होती है। रामेश्वरम् की गहनताम सिन्धु की जलराशि की पावन पंक से उपजता है- एक अति पुनीत पंकज अर्थात कमल जो सदैव सूर्यमुखी होता है और उसे मिलते हैं ज्ञान विज्ञान के पंख जो उसकी सूर्य की ओर उड़ान में सहायक होते हैं। जैसे सागर जल से मेघ बनते हैं और उसके गहरे तट से हजारों फीट ऊपर उड़कर मेघालय की रचना कर देते हैं, वहीं शीतल श्वेत सुदृढ़ शिलांग के प्रौद्योगिक उच्च शिक्षण संस्थान में विद्यमान सुसज्जित छात्र एवं शिक्षकगण स्वागत ही कर पाते हैं कि धरती माता अपने वर्चस्वी पुत्र को अपनी गोद में समेट लेती है और वेदमाता कह उठती है- 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' इस सूर्यास्त की वेला में पंकज सूर्य का समर्थन किये बिना नहीं रह सकता है। ढाका बांग्लादेश में कभी उन्होंने छात्रों को यही सीख दी थी -'अगर तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो, तो सबसे पहले तुम सूरज की तरह जलो। सपना वह नहीं जो तुम सोते हुए देखते हो, सपना वह है जो तुम्हें सोने न दे।' ऐसे हमारे प्रक्षेपणास्त्र पुरुष, राष्ट्रपति, भारत रत्न, राष्ट्रऋषि डॉ. कलाम के जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए।

- पं देवनारायण भारद्वाज,
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

गुरुकुल गीत

गुरुकुल प्यारा जग में हमारा, ज्ञान की ज्योति जलाते हम।
जीवन के समरांगण में यहाँ, गीत विजय के गाते हम।।
आँख खुली माँ के आँचल में, स्नेह पिता का अपार मिला,
कुलभूमि में माँ सम लालन, पिता के जैसा प्यार मिला,
अविचल रहकर नित पढ़ते हैं, लक्ष्य पे पाँव बढ़ाते हम,
जीवन के समरांगण में यहाँ, गीत विजय के गाते हम।।1।।
कुल के पिता स्वामी श्रद्धानन्द, कुल-दाता हैं ज्योति प्रसाद,
कर्म करें वैदिक पथ के, ना आये जीवन में अवसाद,
मेधा बुद्धि बढ़े हमारी, यह विद्या नित पाते हम,
जीवन के समरांगण में यहाँ, गीत विजय के गाते हम।।2।।
ब्रह्मचर्य का पालन करके, ओज व तेज बढ़ायें हम,
आचार्यों के संरक्षण में, नूतन शिक्षा पायें हम,
कुल है प्यारी सुमन-वाटिका, कण-कण को महकाते हम,
जीवन के समरांगण में यहाँ, गीत विजय के गाते हम।।3।।
क्रीड़ांगण की शोभा हमसे, उच्च वितान तानते हम,
कुल-मर्यादा भंग न होवे, सद्व्यवहार जानते हम,
नाम विश्व में चमके कुल का, उर में भाव जगाते हम,
जीवन के समरांगण में यहाँ, गीत विजय के गाते हम।।4।।
ईशवन्दना उभयकाल की, मन में पावन भाव भरे,
पग-पग बाधा लक्ष्य जो रोके, उत्साहित हर काल करे,
श्रम करते आश्रम में रहकर, हार को मार भगाते हम,
जीवन के समरांगण में यहाँ, गीत विजय के गाते हम।।5।।
गुरुकुल मेरा हे प्रभुवर! आशीष तुम्हारा नित पावे,
आयु हो गई सौ वर्षो की, चिर यौवन को ही पावे,
कलरव कूजन द्विजगण करते, आनन्द से हर्षाते हम,
जीवन के समरांगण में यहाँ, गीत विजय के गाते हम।।6।।

रचना : नन्दकिशोर आर्य
संस्कृत प्राध्यापक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र

माता-पिता कभी सन्तान का बुरा नहीं सोचते, अतः उनके निर्णयों की कद्र करें।

शिवरात्रि : भारत के स्वर्णिम भविष्य की रात्रि

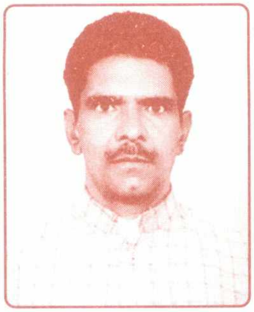

आचार्य दयाशंकर जी

समूचा ब्रह्माण्ड पल-प्रतिपल परिवर्तन क्रियाशील है। एक-एक वस्तु, पदार्थ प्रतिक्षण बदलाव की स्थिति में हैं। बीज का रूप कुछ और वह नन्हें से पौधे में परिवर्तित हुआ, नन्हा पौधा वृक्ष में परिवर्तित हुआ, वृक्ष फल तथा फूलों से युक्त परिवर्तित हुआ। जिस नन्हें पौधे को एक अल्प शक्तियुक्त बकरी उखाड़ देती है वही परिवर्तित होते-होते इतना स्थूल तथा दृढ़ बन गया कि हाथी जैसा शक्तिशाली प्राणी उसको उखाड़ना तो दूर हिला भी नहीं पाता। एक नन्हा शिशु परिवर्तित होते-होते युवा, वृद्ध तथा जरावस्था को प्राप्त हो जाता है।

एक अनुभव यहाँ प्रासंगिक होगा -'गुरुकुल प्रभात आश्रम में मैं स्नातक की उपाधि प्राप्त कर गाँव में आया। वहाँ मेरे गाँव के पास सरुरपुर कलां नामक ग्राम है, वहाँ आर्यवीर दल की शाखा आरम्भ की। उस शाखा में एक होनहार क्रियाशील तथा आर्य परिवार का एक संस्कारी बच्चा, जिसका नाम बिजेन्द्र था, भी आया करता था। उस बालक का स्वास्थ्य बहुत आकर्षक हृष्ट-पुष्ट तथा ब्रह्मचर्य से युक्त था। मेरी इच्छा थी कि प्राणायाम के बल से बल प्रदर्शन का उसे अभ्यास कराया जाये। प्राणायाम में अद्‌भुत शक्ति होती है। ये उस बालक की भी रुची थी परन्तु तत्पश्चात मुझे आजीविका हेतु बाहर जाना पड़ा। लगभग 15 वर्षोपरान्त मैं इन्दौर (मध्य प्रदेश) से गाँव आया। एक दिन किसी कार्यवश मैं मोटरसाइकिल से कहीं जा रहा था तो मैंने देखा कि दो व्यक्ति मेरा पीछा कर रहे हैं। मैं थोड़ा घबराया, इतने में एक गाड़ी मेरी मोटरसाइकिल के आगे आकर खड़ी हो गयी और उसमें से दो व्यक्ति नीचे उतरे तथा मेरी ओर बढ़ने लगे। उनमें एक व्यक्ति सामान्य आकार वाला तथा दूसरा व्यक्ति का शरीर अत्यन्त आकर्षक, एक पहलवान सदृश गठीला था। स्वाभाविक मेरे मन में आशंका थी और भय भी किन्तु गठीले शरीर वाले पहलवान दिखने वाले व्यक्ति ने मेरे चरण-स्पर्श किये और बोला गुरुजी! पहचानते हो? अभी मैं कुछ समझा नहीं था कि वह बोला- मैं बिजेन्द्र हूँ। ये सुनकर मैं अति प्रसन्न हुआ और उसकी पीठ थपथपाई। मैंने कहा बिजेन्द्र जी इतना भारी परिवर्तन ! कहाँ एक छोटा सा बालक और कहाँ परिवर्तनस्वरूप यह भारी भरकम शरीर। ये है शाश्वत, स्वाभाविक, नैसर्गिक परिवर्तन। जो स्वतः चलता है।'

यह परिवर्तन अपनी सीमा और मर्यादा को नहीं तोड़ता। इस परिवर्तन में किसी की सोची-समझी साजिश नहीं होती। इसमें विकास मर्यादित रहता है तथा यह विकार भी सृष्टि नियम के अनुकूल रहता है। एक छोटा-सा पौधा परिवर्तन होने पर एक ही गुण, कर्म, स्वभाव वाला होगा न कि कुछ और बन जाता है। एक पशु परिवर्तन के उपरान्त पशु ही रहता है न कि वह मानव में परिवर्तित हो। इसके विपरीत दूसरा परिवर्तन वैचारिक तथा मानसिक होता है। इसी को मान्यता अथवा मत भी कहते हैं। यह परिवर्तन असामान्य और अप्राकृतिक मात्र मन की धारणा होती है। यह परिवर्तन समाज राष्ट्र को विपरीत दिशा की ओर अग्रसर करने का मुख्य आधार होता है। इस परिवर्तन का परिणाम अत्यन्त भयानक होता सकता है। जगद्‌गुरु, महाशक्तिशाली भारतवर्ष को इसी मानसिक वैचारिक परिवर्तन ने उस स्थिति तक पहुँचा दिया जिसकी किसी ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी।

सत्यार्थप्रकाश के अनुसार महाभारत युद्ध से लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व से ही इस विकृत बीज ने अपना नन्हा सा मुख बाहर निकाल लिया था और बढ़ते-बढ़ते द्वापर के अन्तिम चरण में इस महावैचारिक परिवर्तन ने एक भयानक रूप धारण कर लिया। वेद ज्ञान का सूर्य अस्तांचल की ओर बढ़ने लगा, धीमे-धीमे ज्ञान का प्रकाश क्षीणता की ओर बढ़ रहा था। विलासता पूर्ण जीवन की शुरुआत हो चुकी, स्वार्थ, मोह, लोभ ने मानव-मानव पर अपना शिकंजा कर लिया था। अहंकार तथा आसुरी प्रवृत्ति ने राज्य की सीमाओं का उल्लंघन करना आरम्भ कर दिया। भीष्म पितामह जैसे मनीषी अपना क्षात्रधर्म भूलकर उसी प्रवाह में बहने लगे परिणामस्वरूप महाभारत जैसे भयंकर युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी। इस युद्ध से प्राचीन भारतीय परम्परा, मर्यादा, संस्कृति, सभ्यता, शौर्य का सम्पूर्ण विनाश हो गया। प्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार -

दुवृन्त दुर्योधन न जो सठता सहित हठ ठानता।
जो प्रेमपूर्वक पाण्डवों की मान्यता को मानता।।
तो डूबता भारत न यों रणरक्त पारावार में।
ले डूबता है एक पापी नाव को मझधार में।।
हा! बन्धुजनों के ही करों से बन्धुजन मारे गये।
हा! तात से सुत शिष्य से गुरु सहठ संहारे गये।।

इस युद्ध के साथ-साथ भारतवर्ष का अस्तित्व समाप्त-सा हो गया। धर्म, मर्यादा चरमरा गयी। जैसे शक्तिहीन, बूढ़े तथा बीमार शेर को लकड़बग्घे भी चहुँओर से घेरकर मार डालते हैं, वही स्थिति

माता-पिता का ऋण सन्तान जीवन-भर में नहीं चुका सकती।

गौरवशाली भारत की थी। चारों ओर से आक्रमणकारियों ने घेरना आरम्भ कर दिया, बाहरी शक्तियों ने अपना आधिपत्य शुरु किया। पहले हुण, फिर मुगल और फिर अंग्रेज जैसी बाहरी शक्तियाँ जहाँ आक्रमण कर यहाँ के ज्ञान-विज्ञान को नष्ट करने पर उतारू थी जिसके चलते नालंदा तथा तक्षशिला जैसे आर्य वैदिक ज्ञान-विज्ञान केन्द्रों के अथाह भण्डार को जलाकर राख कर रहे थे, यहाँ के गौरवशाली इतिहास की धज्जियां उड़ा रहे थे, वहीं अन्दर से तथाकथित महंत, पण्डे, पुजारी, धार्मिक वैदिक धर्म को तार-तार करने में लगे थे। वेदों का स्थान पुराणों ने ले लिया। यज्ञशालाओं का स्थान मठों तथा मंदिरों ने ले लिया। धर्म के ठेकेदारों ने धर्म की परिभाषा ही बदल डाली। भारतीय धन सम्पत्ति तथा धर्म सम्पत्ति दोनों पर ही बाहर-भीतर से आक्रमण हो रहे थे। कहीं धर्म, संस्कृति, सभ्यता पर आक्रमण तो कहीं हमारे गौरवशाली इतिहास पर आक्रमण। इस प्रकार अपनी लुटती लाज तथा संस्कृति सभ्यतारूपी चीरहरण पर भारतमाता सिसकियाँ भर रही थी। चिरकाल से आस लगाये एकटक निहार रही थी कि कोई सपूत आये और मेरी अस्मिता पर होने वाले प्रहार को रोके तथा मेरे अस्तित्व को बचाये।

समय ने करवट बदली। 12 फरवरी 1824 का यह पावन दिन । आकाश में जैसे ही बालादित्य ने अंधकार आच्छादित भूमण्डल को आलोकित किया वैसे ही गुजरात प्रान्त के टंकारा में नन्हें शिशु का प्रभात हुआ। कर्षणदत्त तिवारी के घर में पुत्ररत्न का प्रभात होने से हर्षोल्लास था, किन्तु जिस घर में बालक मूलशंकर का जन्म हुआ वह भी घोर शैव पाषाण पूजक, आडम्बरवादी था। मानों जेल जें जैसे कृष्ण ने जन्म लिया, ठीक वैसे ही पौराणिकता से ओतप्रोत कारागार में मूलशंकर ने जन्म लिया। उधर कृष्ण का जन्म होते ही कारागार के ताले टूट गये थे, इधर मूलशंकर का जन्म होते ही मानो भारत माता के पैरों में पड़ी बेड़ियाँ ढीली होने लगी। नियति प्रबल होती है। बालक समयानुसार बड़ा हो गया, एक घटना बड़ी विचित्र घटी। लगता है परमेश्वर ने ही पिशाचों के चंगुल से भारत माँ को मुक्त कराने के लिए ही इस घटना को जन्म दिया हो।

शिवरात्रि का अवसर था, पिताजी ने छोटे बालक मूलशंकर को भी इस पूजन व रात्रि जागरण के लिए प्रेरित किया और दृढ़ निश्चयी तथा श्रद्धावान पुत्र को आश्वासन दिलाया कि यदि सम्पूर्ण रात्रि व्रतपूर्वक जागरण करोगे तो शिव साक्षात दर्शन देंगे। बालक अति उत्सुक था कि आज जन्म-जन्मान्तरों की इच्छा पूर्ण होगी, भगवान शिव को देखूंगा। इधर मात्र एक बहाकावा था, उधर इस बहकावे में भारत का स्वर्णिम भविष्य का सपना साकार होने वाला था। सदियों से पड़ी भारत मां की बेडियाँ छिन्न-भिन्न होने वाली थी। रात्रि का समय हुआ। भक्ति शिव मंदिर पहुंचे, पूजन के उपरान्त रात्रि जागरण का प्रथम चरण पूर्ण हुआ, द्वितीय चरण के मध्य भक्त लोग तथा स्वयं पिताजी भी निद्रा की गोद में खेलने लगे किन्तु बालक के मन में विश्वास था कि न जाने भगवान त्रिनेत्रधारी कब प्रकट होंगे। नियति ने अवसर का लाभ उठाया, ठीक समय पर कुछ ऐसी घटना घटी कि जब मात्र मूलशंकर एकटक शिव प्रतिमा की ओर निहार रहा था कि कुछ चूहे बिल से बाहर आए और शिव की मूर्ति पर चढ़कर प्रसाद खाना शुरु कर दिया। तब तक भी मूलशंकर में मात्र हलचल ही हो रही थी कि अचानक चूहों ने पाषाण मूर्ति पर मल-मूत्र विसर्जन कर दिया।

इधर सामान्य घटना घट रही थी वहाँ मूलशंकर के अन्तकरण में असामान्य घटना घट गयी। महापुरुषों की बाह्य घटनाओं से बहुत बड़ी घटना घटित हो जाती है। ऐसी घटना जो समाज तथा राष्ट्र की दिशा तथा दशा ही बदल देती है। भाप से केतली पर रखे ढक्कन को सदियों से देखा जा रहा था, वही घटना जब जेम्स वॉट के सामने घटी तो क्रान्ति आ गयी, इसी घटना से रेल के इंजन का आविष्कार हुआ। आज जितनी तकनीक से रेल इंजनों का निर्माण हो रहा है वह जेम्स वॉट की व्याख्या है। ऊपर की दिशा में फेंकी गयी वस्तु अथवा पेड़ से नीचे गिरते हुए फल को सैकड़ों लोग प्रतिदिन देखते हैं, किन्तु न्यूटन ने इसी सामान्य घटना से विज्ञान को सिद्धान्त दे दिया। इस प्रकार सैकड़ों उदाहरण है जिन घटनाओं से अभिप्रेरित होकर एक मजबूत तथा असामान्य क्रान्ति का सूत्रपात हुआ, उन्हीं घटनाओं में से एक यह शिवरात्रि की घटना है। ...**(क्रमशः)**

माता-पिता ही सन्तान के लिए प्रथम गुरु और सर्वथा पूज्य है।

Poverty Of india

Br Utsav Arya IX B

Poverty *is a state of hunger, lack of shelter. It also is a situation in which parents are not able to send their children to school or a situation where sick people can't afford treatment. It also means lack of clean water and sanitation facilities, lack of regular job at a minimum decent level, etc. Every country has different poverty estimation level. In India a person whose per day income is below than 1.25 Dollar is considered to be BPL (Below Poverty Line) while in America a person not having a car is considered to be poor. This is because America is a developed nation. Its economy is many times stronger than India.*

There are so many reasons for poverty in India. India was under the control of many rulers, britishers and foreign invaders for thousands of years who swept away all the wealth from India. Earlier, one of the major factors of poverty in India was the reign of Britishers over India for about 200 years. During this period India didn't develop because Indians worked as a slave or rarely at a small post in offices at a low income. Better education was not provided to them.They were illiterate, that's why it took India a long time to get rid of british rule. But nowadays the major factor of poverty is growing population, corruption, price hike etc. Due to growing population there is a job crisis everywhere and also government is unable to make a better policy for such large number of poor people. Even educated people are unemployed and are seen workless at home, because they are not skilled. The PM of our country started a programme 'Skill India' to skill all unemployed. It will also help in ' Make In India' campaign. The other cause for poverty is corruption. The government provides fund for various schemes, but it doesn't reach completely to the common people, because some of the corrupted politicians and other government employees scandal half of the fund as Black Money and only half of it reaches us and the poor. That why proper services are not provided to us. The poor and illiterate remain unknown of government plans and thus there is no improvement in their status or condition.

India has the highest price hike in the world. Due to price hike the condition of poor declines and they have to starve and as a result they die. They live in jhuggies, over dirty drainage, near garbage heaps, etc. unwillingly and afford rarely one time meal a day. There is a famous proverb for this 'Poor are born in debt and starvation and die in debt and starvation'. In such situation how could India develop?

If we want that our India becomes developed nation and becomes no. 1 in the world then we will have to follow some measures, like fight against Black Money and Price Hike, Promote PM's new programme of demonetisation, speak against corrupted politicians in groups and their extra property and black money. Government should also provide training, education, etc to people so that they are aware of their rights and government plans. We should also try to help stop disputes and strikes like that of in Kashmir, due to which the government loses crores of money which leads to declination of a state and its economy. The poor suffer much from it. Only then in coming few years India's poverty will be 'O' and it will be a developed and richer nation much time better and richer than US.

My Mother

Who sat and watched my unfant head,
When sleeping on my cradled bed,
And tears of sweet affection shed...My Mother.
When pain and sickness made me cry,
Who gazed upon my heavy eye,
And wept for fear that I should die... My Mother.
Who ran to help me when I fell,
And would some pretty story tell,
Or kiss to the place to make it well...My Mother.
And can I ever cease to be,
Affectionate and kind to thee,
Who was so very kind to me...My Mother.
Ah! No, the thought I cannot bear,
And if god please my like to spare,
I hope I shall reward they care...My Mother.
When thou art old, feeble and gray,
My Healthy arm shall be they stay,
An I will soothe the pains away...My Mother.

Br. Tushar Arya, X C

चल उड़ जा रहे पंछी

आचार्य सत्यप्रकाश
आचार्य, आर्ष महाविद्यालय
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

परमात्मा को जिन्होंने जाना है वे उसके बारे में कहना भी चाहे तो अपने अनुभव को कह नहीं पायेंगे। उसे कहने का कोई उपाय नहीं है। फिर भी उसे व्यक्त किया जा सकता है, इशारे किये जा सकते हैं और जो समझ सकता हो तो इशारों को समझ लेगा। इसके विपरीत जिसने जिद्द कर रखी हो ना समझने की तो उसके सामने सूरज भी उगा हो तो भी वह आँखे बन्द कर लेगा।

एक दिन हमेशा की तरह शिष्यों को उपदेश देने के लिए महात्मा बुद्ध सुबह-सुबह सभागार में पधारे। श्रोताओं की भीड़ इकट्ठी थी पहले से ही। इसके पहले कि वे बोलने के लिए अपना मौन तोड़ते, उन्होंने देखा - एक पक्षी कक्ष (कमरे) के वातायन (खिड़की) पर आ बैठा, परो को फड़फड़ाया, चहका और फिर उड़ गया। महात्मा बुद्ध ने वातायन की तरफ नजर उठाकर कहा- 'आज का प्रवचन समाप्त हुआ' और वे सभा से चले गये।

यह प्रवचन महात्मा बुद्ध के गहरे से गहरे प्रवचनों में से एक है। इतना ही तो बुद्ध चाहते हैं कि संसार तुम्हारा वातायन है। उस पर तुम बैठो पर उसे तुम घर मत बना लो। वहाँ थोड़ी देर विश्राम कर लो, लेकिन वह मंजिल नहीं है। बैठकर कहीं पंखों को फड़फड़ाना मत भूल जाना, नहीं तो खुला आकाश सदा के लिए खो जाएगा। पक्षी भी बहुत देर बैठा रह जाए, तो पंखों की क्षमता खो जाती है। पक्षी भी बहुत देर बैठा रह जाए तो शायद यह भूल ही जाए कि उसके पास पंख भी हैं क्योंकि क्षमताएँ हमें वही याद रहती हैं, जिनका हम उपयोग करते हैं। जिनका हम उपयोग नहीं करते वे धीरे-धीरे निष्क्रिय हो जाती हैं और उनकी क्षमतााएं खो जाती है। यदि आप चलें नहीं तो थोड़े ही दिन में पैर पंगु हो जायंगे। यदि आप अंधेरी कोठरी में ही रहे और देखे नहीं तो आँखे जल्दी अंधी हो जाएंगी। यदि आप शब्द को न सुनें, यदि आपके कान पर कोई ध्वनि तरंगित ही न हों तो जल्दी ही आप बहरे हो जाएंगे। आप जो नहीं करेंगे, उसके करने की क्षमता खो जाएगी।

कितने जन्म हुए जब से आप उड़े नहीं। आपने पंख नहीं फड़फड़ाये। कितना समय बीत गया जबसे आप खिड़की पर बैठे हैं और आपने खिड़की को ही घर समझ लिया। पड़ाव के लिए रुके थे इस वृक्ष के नीचे, लेकिन कितना समय बीता, तब से आपने इसे ही घर मान लिया है। पंख फड़फड़ाओ। यदि बुद्धों के पास आपने पंख फड़फड़ाना नहीं सीखे तो और कुछ सीखने को वहाँ है भी नहीं।

यही तो प्रवचन है, यही उनका संदेश है कि आप उड़ सकते है मुक्त आकाश में। आप मुक्त गगन के पंछी हैं। आप व्यर्थ ही डरे हैं। आप भूल ही गये हैं कि आपके पास पंख है। आप पैरों से चल रहे हैं। आप आकाश में उड़ सकते थे। थोड़ा फड़फड़ायें ताकि आपको भरोसा आ जाए। ध्यान फड़फड़ाहट है पंखों की, उन पंखों की जो उड़ सकते हैं दूर आकाश में जा सकते हैं।

ध्यान सिर्फ भरोसा पैदा करने के लिए है ताकि विस्मृति मिट जाए, स्मृति आ जाए। संतों ने, कबीर ने, नानक ने इसके लिए 'सुरति' शब्द का प्रयोग किया है। सुरति का अर्थ है स्मरण आ जाए। जो भूला है उसका ख्याल आ जाए। आपने कुछ खोया नहीं है, आप सिर्फ भूले हैं। खो तो आप सकते थे नहीं। पक्षी भूल सकता है कि उसके पास पंख हैं, खा कैसे सकेगा? और कितने ही जन्मों तक न उड़े, तो भी अगर उड़ने का ख्याल आ जाए तो पुनः उड़ सकता है।

विवेकानन्द एक छोटी-सी कहानी कहा करते थे। वे कहते थे, ऐसा हुआ कि एक सिंहनी एक पहाड़ से छलांग लगा रही थी। वह गर्भवती भी और छंलाग के बीच में ही उसे बच्चा हो गया। वह छंलाग लगाकर चली गई बच्चा नीचे से गुजर रही भेड़ों के एक झुंड में गिर गया। फिर भेड़ों के बीच में ही वह पला-बड़ा हुआ। वह सिंह का बच्चा तो है लेकिन याद कौन दिलाए? उसे पहचान कौन कराए? वह भेड़ों के बीच, उनके साथ ही बड़ा हुआ और उसने समझा कि मैं भी भेड़ हूँ, यह स्वाभाविक भी था।

आप जिनके बीच बड़े होते हैं, वही आप अपने को समझ लेते हैं। हिन्दुओं के बीच तो हिन्दू, मुसलमानों के बीच तो मुसलमान, सिखों के बीच तो सिख। जिनके बीच आप पैदा हुए होते हैं, आप वही अपने को समझ लेते है। जो आपकी भूल है, वही उस शेर के बच्चे की थी। शेर का बच्चा आपसे ज्यादा बुद्धिमान तो नहीं था। उसने समझा कि मैं भेड़ हूँ, वह भेड़ों के बीच ही चलता, भेड़ों जैसा ही भयभीत होता, घास-पात खाता।

एक दिन एक सिंह ने देखा। भेड़ों की कतार गुजरती थी, उनके बीच एक सिंह। सिंह बड़ा हैरान हुआ। यह असम्भव घट रहा है। न तो भेड़े उससे घबराती हैं, न वह भेड़ों को खा रहा है। ठीक भेड़ों के बीच में धसर-पसर जैसे और सब भेड़ें चली जा रही हैं, ऐसे ही वह भी चल रहा है। यह सिंह इस भेड़ों की भीड़ में आया। भेड़ें भागी, चिख-पुकार मच गई, वह सिंह भी भागा, खीच-पुकार मचाता हुआ। उसकी आवाज भी भेड़ों के जैसी हो गई थी क्योंकि भाषा भी तो आप उनसे सीखते हैं जिनके पास आप होते हैं। भाषा कोई जन्म के साथ लेकर तो पैदा नहीं होता। भाषा भी सीखी जाती है, वह भी पाठ है।

...(क्रमशः)

मानव जन्म सभी जन्मों में श्रेष्ठ है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ

*प्रिय पाठकों, गुरुकुल के पूर्व छात्र जो अब समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त कर वैदिक संस्कृति और वेदों का प्रचार-प्रसार कर समाज को नई दिशा दे रहे हैं, ऐसे महानुभावों हेतु '**गुरुकुल-दर्शन**' द्वारा '**गुरुकुल कुरुक्षेत्र की मधुर स्मृतियाँ**' नाम से यह स्तम्भ आरम्भ किया गया है। इसके अन्तर्गत गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पूर्व छात्रों के अनुभव, अध्ययन के समय की मधुर स्मृतियों को प्रकाशित किया जाएगा। आशा करते हैं कि आपको यह स्तम्भ पसंद आएगा।*

प्रो. वेदकुमार 'वेदालंकार'
डॉ. पतंगे हॉस्पीटल, पतंगे रोड
मु. पो.-उमरगा, जिला-उस्मानाबाद
महाराष्ट्र-413606

गतांक से आगे...इसलिए जिस दिन स्नातक जी की उठाने की बारी होती थी, सारे ब्रह्मचारी एक झटके से उठ बैठते थे। कुछ आलसी, नींद को रोक नहीं पाते थे, तो वे स्नातक जी की लौटती बारी की लाठी-प्रहार से डरकर तख्त के नीचे जाकर सो जाते थे। झूठ क्यों बोलूं मैं भी उन निद्रा-प्रेमी बालकों में से एक था। पलंग के नीचे जाकर सो जाता था। कुछ दिन बाद स्नातक जी को पता लगा कि लड़के तख्त के नीचे सो जाते हैं। तब उन्होंने यह किया अंधेरे में लौटती बारी तख्त के नीचे लाठी घुमा-घुमाकर देखा करते थे और मैं तख्त के ऊपरवाली लाठी का मजा तख्त के नीचे चखा करता था। कभी-कभी तो जब नींद टाले नहीं टलती थी तो शौच के बहाने जंगल में जाकर किसी पेड़ के नीचे ही सो जाता था।

जब स्नातक जी की बारी समाप्त हो जाती थी, तो अगले सप्ताह शास्त्री जी हमें उठाने के लिए आते थे। हमें उनकी बारी आने पर बहुत प्रसन्नता होती थी, क्योंकि वे स्वयं बहुत ही निद्रालु थे। अपने पलंग पर बैठे-बैठे ही वे पुकारकर कहा करते थे - हाँ... ब्रह्मचारियों, उठ जाओ. ..। तीन गिनने तक सब उठ जायेंगे...। एक....दो.... और तीन गिनने तक शास्त्री जी स्वयं सो जाते थे। फिर क्या था? हम सबको पन्द्रह मिनट नींद का बोनस बिन माँगे मिल जाता था।

सवेरे 4:30 बजे उठकर हम शौच के लिए लोटा लेकर अंधेरे में ही बाहर जंगल में जाते तो अवश्य थे किन्तु उसमें भी एक बड़ा खतरा रहता था। गुरुकुल के आसपास घना वन था जिसमें साँप-बिच्छुओं की भरमार थी। तथापि यह एक आश्चर्य की बात है कि मेरे पूरे दस वर्षो के निवास-काल में एक भी ब्रह्मचारी को साँप ने नहीं काटा। सर्प-दंश से मृत्यु की केवल एक घटना का मुझे स्मरण है।

गर्मियों के दिनों में सबके तख्त बाहर आंगन में लगाये जाते थे। सबके बीच प्रकाश के लिए एक लालटेन जलती रहती थी। लालटेन की रोशनी से आकर्षित होकर कीट-पतंगे वहाँ आ जाते थे और उनका शिकार कर पेट भरने के लिए मेंढक भी वहाँ आ जाते थे। ऐसे में मेंढक का शिकार करने एक साँप भी वहाँ आ पहुँचा। पास के तख्त पर बिहार का कोई ब्रह्मचारी सोया हुआ था। नींद में उसने करवट बदली, तो उसका एक पैर तख्त से नीचे लटक गया। इसे धोखा जानकर साँप ने उसके पैर पर ही दंश कर लिया। ब्रह्मचारी गहरी नींद में रहा होगा, उसे साँप काटने की जानकारी भी नहीं हो पायी और अगले दिन वह मृत पाया गया। इस एक आकस्मिक घटना को छोड़ दिया जाए तो साँप के काटने से एक भी मृत्यु नहीं हुई। साँप उस प्रदेश में बहुत थे क्योंकि दिन के उजाले में हम विद्यार्थी प्रायः बड़ा-छोटा साँप मार डालते थे। बिच्छुओं की तो गिनती करना कठिन था। वे बेचारे बिना अपराध के ही हमारे हाथों मारे जाते रहे। यहाँ एक मनोरंजक घटना याद आ रही है। कलकत्ता से आये एक ब्रह्मचारी ने कभी बिच्छू नहीं देखा था। एक दिन उसने विचित्र-सा प्राणी देखा, तो चिल्लाया - देखो, देखो, ये क्या है? एक शरारती लड़के ने उससे कहा- अरे, कुछ नहीं है। इसे पकड़कर बाहर फेंक दे और उस अनजान लड़के ने बिच्छू को पकड़ लिया। बिच्छू ने अपना धर्म बखूबी निभाया, फिर वेदना और जलन के मारे छटपटाते हुए उस लड़के को हस्पताल ले जाना पड़ा। इसके बाद शायद उस लड़के ने बिच्छू छोड़ किसी तिलचट्टे को भी हाथ नहीं लगाया होगा।

शौच से लौट आने के बाद सब लड़कों को एक पंक्ति में बिठा दिया जाता था। सबको बबूल या नीम की दातुन दी जाती थी। दातून के एक छोर को चबा-चबाकर ब्रश जैसा बनाना पड़ता था और ब्रश की तरह चलाकर दांत साफ करने पड़ते थे। नींद के बारे बेबस हुए कई ब्रह्मचारी इतनी तकलीफ भी नहीं उठा पाते थे, वे केवल मुँह के सामने ही अंधेरे में खाली जगह में दातुन घुमाते रहते थे। किन्तु कुछ दिनों बाद स्नातक जी ने ताड लिया कि कुछ लड़के (उनमें से एक मैं भी था) केवल दातुन हिलाते रहते हैं। तब से चतुर-प्रहरी स्नातक जी ने यह करना शुरु कर दिया कि वे हरेक की दातून जांचने लगे कि चबायी गई है या नहीं। बिन चबाई दातून वाले को ऐसा थप्पड़ लगता था कि नींद पूरी तरह खुल जाती थी। **(क्रमशः)**

समय-समय पर आचरण में पड़ी हुई मानवता अपना प्रदर्शन करती ही है।

कैसे तैयार करें जीवामृत ?

प्राकृतिक कृषि में जीवामृत बहुत महत्त्वपूर्ण है। जीवामृत बनाने के लिए क्या आवश्यक सामग्री है और इसका निर्माण कैसे किया जाता है। आइए, इस पर विस्तृत चर्चा करते हैं।

आवश्यक सामग्री

1) देशी गाय का (साथ में देसी बैल, भैंस मिश्रित) गोबर 10 किलो।

2) देशी गाय का गोमूत्र (साथ में देशी बैल, भैंस मिश्रित) या मानवी मूत्र 5 से 10 लीटर।

3) गुड़ 1 से 2 किलो या 4 लीटर गन्ने का रस या एक लीटर नारियल पानी या 10 किलो गन्ने के छोटे-छोटे टुकड़े या 10 किलो देशी ज्वार के पौधों के टुकड़े या 1 किलो मीठे फल का गुद्दा जैसे चीकू, आम, अमरूद, केला, पपीता, किन्नू आदि।

4) मूंग या उड़द या तुअर या चने का आटा 1 से 2 किलो।

5) जीवयुक्त, मिट्टी मुट्ठीभर (मेढ़ पर की मिट्टी या जंगल की मिट्टी)

6) पानी 200 लीटर।

बनाने की विधि : दो सौ लीटर क्षमता वाले लोहे का ड्रम लें। ड्रम के नीचे तल के पास एक छेद करें और उसमें प्लास्टिक की नली और कॉक लगा दें। बाद में उसमें 200 लीटर पानी डालें। पानी में गोबर, गोमूत्र, मीठे पदार्थ, आटा और जीवयुक्त मिट्टी डाले और लकड़ी के डंडे से घोले। यह द्रावण दो से तीन दिन छाव में सड़ने के लिए रखे। प्रतिदिन दो बार सुबह और शाम लकड़ी के डंडे से घड़ी के काटे की दिशा में घूमाएं, उसी दिशा में बायें से दायी ओर चक्राकार दो मिनट के लिए घोलना है। जीवामृत को बोरे से ढ़ककर रखें।

जीवामृत के सड़ने के समय अमोनिया, कार्बन मानो ऑक्साइड, कार्बन डाईऑक्साइड, मिथेन जैसी हानिकारक वायु का निर्माण होता है। जूट के बारे सछिद्र होते हैं, उन छेदों में से यह वायु वातावरण में निकल जाती है। जीवामृत बनने के बाद उसे सात दिन तक उपयोग में लाना है। सात दिन के बाद बचा हुआ जीवामृत भूमि पर फेंक देना चाहिए, यह उपयोग लायक नहीं रहता।

जीवामृत का प्रयोग कैसे करें ?

जीवामृत का प्रयोग साथ में दिये गये चित्र के अनुसार करना चाहिए। कुएं से खींचकर डिलवरी पाइप से पानी हौद में डाला जाता है, उस हौद में से जो नाली खेत में पानी देने के लिए निकाली जाती है, उस नाली में से बहुत हुए पानी में जीवामृत नाली के बाजू में रखे हुई टंकी या बॅरल का कॉक चालू करके थोड़ा-थोड़ा छोड़िए। इस प्रकार पानी के साथ जीवामृत भी आपके खेत में फसलों की जड़ों तक पहुंच जाएगा।

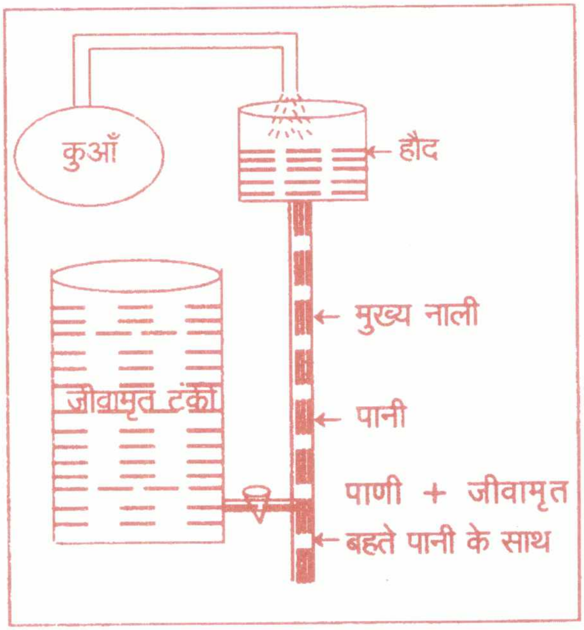

जीवामृत महीने में दो बार या एक बार उपलब्धता के अनुसार सिंचाई के पानी के साथ प्रति एकड़ 200 लीटर हर बार देना चाहिए। फलों के पेड़ों के पास पेड़ की दोपहर को 12 बजे जो छाया पड़ती है, उस छत्री के पास (दोपहर की छांव) प्रति पेड़ दो से पांच लीटर जीवामृत भूमि पर हर महीने में एक या दो बार गोलाकार डालना है। जीवामृत डालते वक्त भूमि में नमी होना आवश्यक है। इस प्रकार यदि आप समय और आवश्यकतानुसार फसलों व फलदार वृक्षों को जीवामृत देंगे तो निश्चित तौर पर आपका उत्पादन अच्छा होगा और आपकी आय में वृद्धि होगी।

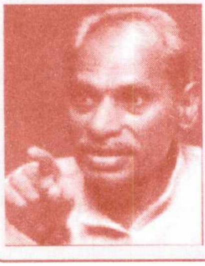

साभार

सुभाष पालेकर जी

पद्मश्री पुरस्कार विजेता

विकासक शून्य लागत

आध्यात्मिक कृषि

नासार्श : नाक में माँस बढ़ना

आयुर्वेदाचार्य, पंचकर्म एवं प्राकृतिक चिकित्सज्ञ

'**नाक में मांस बढ़ना**' आजकल ये समस्या बड़ी गम्भीर होती जा रही है। अंग्रेजी दवाओं से इसका कोई स्थायी उपचार न होने की वजह से कुछ रोगी तीव्र दर तीव्र दवा खाकर शरीर और पैसे दोनों का नाश करते है, साथ ही दो-तीन वर्षो में ही दमा के रोगी बन जाते है क्योंकि इस रोग में जो अंग्रेजी दवाइयाँ चिकित्सकों द्वारा दी जाती है वे सीधे रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता को नुकसान पहुंचाती है। इस वजह से रोगी को बार-बार परेशानी आने लगती है और रोग दिन-प्रतिदिन गम्भीर होता जाता है।

नासार्श रोग का कारण : इस रोग की उत्पत्ति आंतों में बनने वाली आंव के कारण होती है। खराब आंव के कारण ही शरीर में मासांकुर उत्पन्न होते हैं। ये मासांकुर यदि गुदा मार्ग में उत्पन्न होते हैं तो अर्श (बवासीर) कहलाते हैं और नाक में उत्पन्न होते हैं तो इसे नासार्श कहते हैं।

नाक में मासांकुर उत्पन्न होने की वजह से नासामार्ग संकीर्ण हो जाता है जिस कारण धूल, मिट्टी, धुँआ, पराग कंण श्वास के द्वारा अन्दर तो चले जाते हैं लेकिन बाहर नहीं निकल पाते। उन्हें बाहर फेंकने के लिए शरीर प्रतिक्रिया स्वरूप छींक लाता है। अगर छींक से भी वो कण बाहर नहीं निकल पाते तो शरीर दूसरी प्रतिक्रिया स्वरूप बलगम बनाता है ताकि उसके साथ वो धूल, मिट्टी आदि चिपककर नाक या मुँह के द्वारा बाहर आ जाये। बलगम अगर बाहर न निकलकर अंदर गले में ही जाता है तो गला बार-बार खराब होने लगता है क्योंकि टॉनसिल उस बलगम को फेफड़ों में जाने से रोकते हैं। बार-बार खुद पर इनफैक्शन ले लेते है। इस स्थिति पर भी अगर रोगी ध्यान न दें या फिर अंग्रेजी दवाओं से रोग को दबाने का प्रयास करे तो छाती में कफ व बलगम भरने लगता है और रोगी दमा की स्थिति में आ जाता है।

नासार्श रोग के लक्षण : नासार्श रोग के निम्नलिखित लक्षण हैं -

1. नाक के दोनों तरफ दर्द रहना।
2. बार-बार छींके आना या लगातार छींके आना।
3. सिर में भारीपन।
4. नाक बहना या गले में रेशा गिरना।
5. कानों में खारिश, गले में खराश रहना।
6. आखों से दूषित पानी आना व खूजली होना।
7. बोहों का दुखना।
8. सुबह-सुबह गले से कफ आना या बार-बार थूकना।

उपद्रव :

1. बालों में डैंड्रफ, पपड़ी आदि बनना।
2. बालों का गिरना, ज्यादा चलने या सीढ़ियाँ चढ़ने पर सांस फूलना।
3. कान व गले में बार-बार इनफैक्शन होना।
4. मानसिक एकाग्रता का कम होना।
5. खर्राटे आना, बार-बार बुखार आना।
6. रात को सोते समय मुंह से श्वास लेना।

चिकित्सा : इस रोग में प्राकृतिक चिकित्सा व आयुर्वेदिक चिकित्सा बहुत कारगर है परन्तु परहेज करना या उपवास रखना भी अनिवार्य है। इस रोग के लिए नेति (रबरनेति, जलनेति, सूत्रनेति, तेलनेति) अति उत्तम व सबसे सस्ती चिकित्सा है। आयुर्वेद चिकित्सा में इसके लिए नस्य सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा है व वमन भी कारगर है।

परहेज :

1. खट्टी चीजें जैसे दही, नींबू, अचार, मौसमी, अनानास आदि।
2. ठण्डी चीजें जैसे केला, चावल, अमरूद, आईसक्रीम व फ्रिज में रखी हुई चीजें।
3. दूध से बने पदार्थ जैसे खोया, पनीर आदि।
4. दिन में सोना।
5. खाने के तुरन्त बाद स्नान करना।
6. धूप से आकर पानी पीना।

भारतीय सभ्यता व संस्कृति ...पृष्ठ 11 का शेष

जी द्वारा पेहवा के गांव ढोलगढ़, बेरियां, मलिपुर, सूखी, विकासपुरा, बाघली, शाहपुर, चिब्बल फार्म, थाणा, ईशाक बाजीगर का डेरा, गढ़ी, बोहर, चीका रोड़ सहित कुरुक्षेत्र के गुमथला, भूस्थला, गढ़ी चिकरोड़, अजमतपुर, छोटी जरासी, खन्नाहेड़ी, हथीरा, मैंसी माजरा, हरीगढ़ भौरख, चमचार, झांसा रोड पर लेखन कार्य किया।

गुरुकुल का वेद प्रचार विभाग प्रतिदिन लोगों को भारतीय सभ्यता व संस्कृति से परिचित करा रहा है जो निरन्तर गतिमान है। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सैनी जी का कहना है कि भविष्य में इस कार्य में और तेजी लाने हेतु और प्रचारक व भजनोपदेश तैयार किये जाएंगे। जिसके लिए गुरुकुल में आर्य भजपनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण किया गया है और अप्रैल 2017 से इसमें विधिवत प्रशिक्षण कार्य आरम्भ हो चुका है। यहाँ प्रशिक्षण लेने वाले युवाओं के रहने, खाने व प्रशिक्षण की सारी व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क हैं। अगर आप भी इस पुनीत कार्य में सहयोगी बनना चाहते हैं तो गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आकर निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

माया तो मन का गुण है, उसका स्वभाव है।

क्या महाभारत में मंत्र हैं?

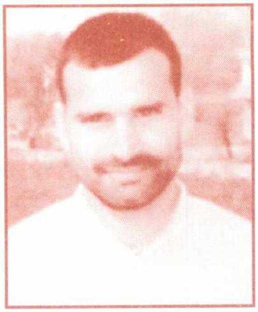

राजेशार्य आट्टा

प्रिय पाठकवृन्द ! संस्कृत के अक्षर-अक्षर को प्रमाण मानने वाले हिन्दू परम्परावादी लोग महारथी भीष्म का जन्म जल के रूप में बहने वाली गंगा नदी से मानते हैं और सत्यवती का जन्म मछली (मत्स्या) के पेट से, जबकि वास्तव में ये गंगा, मत्स्या आदि नाम वाली स्त्रियाँ (मनुष्य) ही थीं, क्योंकि प्रकृति में मनुष्य आदि की उत्पत्ति पहले भी वही थी, जो आज है। पहले का या आज का कोई ऋषि-महर्षि इसे नहीं बदल सकता। मनोरंजन के लिए चाहे कोई कैसी भी कल्पना कर ले, पर वह कल्पना ही रहेगी, इतिहास नहीं।

कर्ण के जन्म की तरह महर्षि वेद व्यास, कृपाचार्य व द्रोणाचार्य के जन्म की भी विचित्र कल्पनाएँ की गई हैं, जो उस काल के ऋषि-महर्षियों को भी कामी व दुराचारी प्रचारित करती हैं। आप सोचिये, क्या यह सम्भव है कि सत्यवती ने नाव में गर्भवती होते ही पुत्र को जन्म दे दिया और पैदा होते ही वह बड़ा होकर पुत्र (वेदव्यास) अपने पिता के साथ चला गया। अप्सरा जानपदी को देखकर ऋषि शरद्वान (गौतम) का वीर्य सरकंडो में गिर गया, जिससे कृप-कृपी पैदा हो गये। घृताची अप्सरा को देखकर ऋषि भारद्वाज का वीर्य द्रोण (यज्ञकलश) में गिर गया और पुत्र (द्रोण) पैदा हो गया।

इन सबसे भी बढ़कर कल्पना द्रौपदी के जन्म के विषय में की गई है कि उसकी उत्पत्ति अग्नि (यज्ञकुण्ड) से हुई थी, उसमें तो माता या पिता का कोई योगदान ही नहीं रहा। फिर वह राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी या याज्ञसेनी कैसे कहलाई? द्रौपदी के विषय में तो और भी बहुत-सी कल्पनाएँ महाभारत व समाज में प्रचलित हैं। यद्यपि ये सब कल्पनाएँ हैं, पर व्यक्ति काल्पनिक नहीं थे। अत: आज हम उन्हीं कल्पनाओं में से कुछ पर चिन्तन करते हैं :-

वैदिक मान्यता तो यही है कि प्राणियों के जन्म पूर्वजन्म के कर्म-फल अनुसार होते हैं, पर महाभारत में द्रौपदी के जन्म के (पौराणिक मान्यतानुसार) दो कारण बताए हैं - ''आदिपर्व, अध्याय 166, श्लोक 48-49 के अनुसार आकाशवाणी ने बताया कि यह कन्या (युवती) क्षत्रियों का संहार करने के लिए प्रकट हुई है। यह देवताओं का कार्य सिद्ध करेगी। इसके कारण कौरवों को बड़ा भय प्राप्त होगा।''

जबकि आदिपर्व के अध्याय 168 के अनुसार द्रौपदी का जन्म पाँच पति पाने के लिए हुआ था (जबकि वह पूर्व जन्म में ही एक ही पति चाहती थी, पर शिवजी की अज्ञानता से अगले जन्म में पाँच पति लेने पड़े)। अब किसे सत्य मानें? सर्वप्रथम विचारणीय है कि राजा द्रुपद तो द्रौणाचार्य को मारने वाला पुत्र पाने के लिए यज्ञ कर रहे थे, फिर साथ में यह पुत्री कैसे आ गयी? और द्रौण को मारने में इसकी क्या भूमिका थी? क्षत्रियों ने देवताओं का क्या बिगाड़ा था, जो वे उनका संहार करना चाहते थे? द्रुपद का अपमान तो द्रोण ने किया था, क्योंकि द्रुपद ने भी द्रोण का अपमान किया था, फिर कौरवों को भयभीत करने के लिए द्रौपदी क्यों प्रकट हुई? और क्या कौरव द्रौपदी से भयभीत हुए? क्या अग्नि में से अस्त्र-शस्त्र व आभूषणयुक्त युवक-युवती पैदा हो सकते हैं?

यदि महर्षि वेदव्यास ने पांचाल देश में जाने से पूर्व ही पाण्डवों को द्रौपदी के पूर्वजन्म की कथा सुनाकर उसे उन पाँचों की पत्नी निश्चित कर दिया था, तो इसमें अर्जुन का क्या पराक्रम रहा? और 'पाँचों बांटकर खा लो' (भुङ्क्तेति समेत्य सर्वे 190/2) कहकर माँ कुन्ती बाद में इसे अधर्म मानकर परेशान क्यों हो रही थी? और युधिष्ठिर भी इसे अधर्म क्यों मान रहे थे? क्या उन्हें व्यास जी का वचन याद नहीं रहा था कि - निर्दिष्टा भवतां पत्नी कृष्णा पार्षत्यनिन्दिता। (168/15)

जब वेदव्यास जी को पता था कि द्रौपदी का जन्म पाँच पतियों (केवल पाण्डवों) को प्राप्त करने के लिए हुआ है, तो उन्होंने यह बात राजा द्रुपद को पहले ही क्यों नहीं बता दी। जिससे वे द्रौपदी को पाँचों की पत्नी बनाने को अधर्म कहकर युधिष्ठिर को इससे मना न करते और वेदव्यास जी को भी राजा द्रुपद को समझाने के लिए न जाना पड़ता। युक्ति और प्रमाणों के आधार पर इसे सिद्ध किया जा चुका है। यथा :-

1. महाभारत आदिपर्व (197-11,12) में द्रौपदी का पाणिग्रहण युधिष्ठिर द्वारा किया जाना लिखा है।
2. आदि पर्व (220-24) में द्रौपदी ने अर्जुन की पत्नी सुभद्रा को आशीर्वाद देते हुए कहा - 'निसपत्नोऽस्तु ते पति:।' (तुम्हारे पति...)
3. सभापर्व (67-29) में द्रौपदी के लिए 'नरेन्द्र पत्नी' (राजा युधिष्ठिर की पत्नी) लिखा गया है।
4. सभापर्व (69-11) में द्रौपदी ने स्वयं को 'धर्मराजस्य भार्या' कहा है।
5. सभापर्व (70-3) में दुर्योधन ने सभी पाण्डवों का अलग-अलग नाम लेकर पति (पत्यौ) एकवचन में (युधिष्ठिर के लिए) प्रयोग किया है।
6. वनपर्व (52-44) में युधिष्ठिर ने द्रौपदी के विषय में कहा -'भार्या च ते सभां नीता प्राणेभ्योऽपि गरीयसी।' अर्थात् प्राणों से भी अधिक

जो शत्रु को भी मित्र समझता है, उसका कोई शत्रु नहीं होता।

गौरवशालिनी मेरी पत्नी सभा में लायी गयी।

7. विराट पर्व (18-01) में द्रौपदी ने स्वयं के लिए कहा- 'यस्या भर्ता युधिष्ठिरः।'

8. विराट पर्व (22-79) में भीम ने द्रौपदी को 'भ्रातुर्भार्या' (भाई की पत्नी) कहा है।

9. उद्योग पर्व (29-36-38) में श्रीकृष्ण ने द्रौपदी के लिए 'पाण्डवस्य पत्नी' (पाण्डु-पुत्र युधिष्ठिर की पत्नी) कहा है। यद्यपि गीता प्रेस संस्करण में 'पाण्डवानां पत्नी' लिखा है, तथापि द्रौपदी को पाँचों की पत्नी मानने से पूर्व इन बिन्दुओं पर भी विचार कर लेना चाहिए। यथा :-

क) क्या स्वयंवर की शर्त पूरी होते ही विजेता का परिचय प्राप्त किये बिना ही उसके साथ अपनी बेटी द्रौपदी को राजा द्रुपद अज्ञात स्थान पर बिना किसी साजोसामान के किसी 'अनाथ लड़की' की तरह भेज सकते थे ?

ख) अपने दामाद व उसके संबंधियों को साधारण-सा भोजन तो गरीब से गरीब व्यक्ति भी देता है। क्या राजा द्रुपद ने इतना भी नहीं किया होगा, जो स्वयंवर जीतने के बाद भी पाण्डव भिक्षा मांगकर लाये और द्रौपदी ने भी उसी भिक्षा में गुजारा किया ? (आदि पर्व 191-7)

ग) क्या यह सम्भव है कि बिना विवाह संस्कार के ही द्रौपदी रात में पाण्डवों के डेरे (कुम्हार के घर) में उन (पाँचों) के पैरों में भूमि पर सोयी ? (आदि पर्व 191-6)

घ) क्या जो बातें अगले दिन घटित हुई (पाण्डवों को महल में बुलाया व भोजन करवाया) उसी समय और उसी स्थान पर नहीं होनी चाहिए थीं ?

ङ.) क्या राजा द्रुपद बिना परिचय प्राप्त किये किसी अज्ञात व्यक्ति के साथ अपनी बेटी को भेज सकते थे, जो बाद में गुप्त रूप से उनका पीछा करने के लिए व्यक्ति भेजे ? यदि द्रौपदी भीम-अर्जुन के साथ भेजी गई होती, तो क्या उनसे पूर्व अपने डेरे पर पहुँचे युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव ने माता कुन्ती को यह शुभ समाचार नहीं दिया होगा। (आदि पर्व 189-26)

च) सारी कहानी इसी झूठ पर टिकी है कि द्रौपदी को साथ लेकर आये अर्जुन ने कहा कि माँ हम भिक्षा लाये, बाँटकर खा लो, पाँच की पत्नी बन गई। जबकि होना तो यह चाहिए था कि स्वयंवर में आये अन्य राजाओं की भाँति अर्जुन का भी परिचय (स्वयंवर जीतने के बाद तो अवश्य) लिया जाता और उनका वहीं मान-सम्मान किया जाता। इसके बाद अर्जुन व द्रौपदी के विवाह की बात चलती। तब बड़े भाई के अविवाहित होने की बात अड़ती और राजा द्रुपद युधिष्ठिर से कहते - 'भवान् वा विधिवत् पाणिं गृहणातु दुहितुर्मम' (आदि0 194-22) अर्थात् आप ही विधिपूर्वक मेरी पुत्री का पाणिग्रहण करें।

जबकि पाँच की पत्नी बनाने वालों ने पत्नी के पास जाने के नियम बनवाने के लिए नारद जी को भी बुला लिया। तब पाण्डवों ने नियम बनाया कि द्रौपदी के साथ एकान्त में बैठे हुए हममें से एक भाई को यदि दूसरा देख ले, तो वह बारह वर्षो तक ब्रह्मचर्यपूर्वक वन में निवास करे। (आदि0 211-19)

अगले ही अध्याय में कथाकारों ने अर्जुन से यह नियम तुड़वा भी दिया। कहानी गढ़ी कि ब्राह्मण की गाय की रक्षा के लिए अर्जुन उसी कक्ष में अस्त्र-शस्त्र लेने चले गये, जहाँ युधिष्ठिर बैठे थे। अर्जुन बारह वर्ष के ब्रह्मचर्यपूर्वक वनवास की दीक्षा लेकर चल पड़े। वनवास में नागकन्या उलोपी अर्जुन पर मोहित हो गई तो अर्जुन ने उसे इरावान नामक पुत्र प्रदान कर दिया। मणिपुर की राजकन्या चित्रांगदा को देखा तो अर्जुन ने स्वयं उसके पिता चित्रवाहन के पास जाकर उसका हाथ मांग लिया और तीन वर्ष तक उसके साथ महल में बिताकर उसे बभ्रुवाहन पुत्र प्रदान किया। कुछ समय बाद अर्जुन द्वारका गये तो काम पीड़ित हो सुभद्रा का अपहरण कर लिया। फिर एक वर्ष द्वारका नगरी में रहे।

जरा सोचिये, क्या ये विवाह बिना ब्रह्मचर्यपूर्वक वनवास की दीक्षा के नहीं हो सकते थे ? इन कहानियों ने क्या अर्जुन को अमर्यादित व चरित्रहीन नहीं बनाया है ? क्या महलों में भोगपूर्ण निवास वनवास (ब्रह्मचर्यपूर्वक वनवास) कहलाता है ? क्या पाण्डवों के राजमहल में भवनों की कमी थी, जो अर्जुन को अस्त्र-शस्त्र भी द्रौपदी के कक्ष (कमरे) में रखे हुए थे ? रोता-चिल्लाता ब्राह्मण खाण्डव-प्रस्थ में आया, क्या उसे रास्ते में कोई भी वीर (क्षत्रिय) नहीं मिला जो चोरों से उसकी गाय छुड़ा दे ? क्या पाण्डवों के पास सैनिक नहीं थे, जो साधारण से कार्य के लिए भी अर्जुन को स्वयं जाना पड़ा ? क्या पाण्डव इतने अयोग्य थे कि वे अपनी पत्नी के पास जाने का नियम भी स्वयं न बना सके, जो नारद जी को आना पड़ा ?

जब द्रौपदी पाँचों पाण्डवों की पत्नी बना दी गई, तो पाँचों से एक-एक पुत्र भी उत्पन्न करवा दिया। द्रौपदी के पाँच पुत्र उत्पन्न होना कोई असम्भव या आश्चर्यजनक बात नहीं है, पर सन्देह तब उत्पन्न होता है जब द्रौपदी श्रीकृष्ण से कहती है :-

पंचभिः पतिभिर्जाताः कुमारा मे महौजसः।
एतेषामप्यवेक्षार्थत्रातव्यास्मिजनार्दन।।
प्रतिविन्ध्यो युधिष्ठिरात् सुतसोमो वृकोदरात्।
अर्जुनाच्छुत कीर्तिश्च शतानीकस्तु नाकुलिः।।
कनिष्ठाच्छुतकर्मा च सर्वे सत्यपराक्रमाः।
प्रद्युम्नो यादृशः कृष्ण तादृशास्ते महारथाः।।
(वन0 12/72-74)

''**जनार्दन !** इन पाँचों पतियों से उत्पन्न हुए मेरे महाबली पाँच पुत्र हैं। उनकी देखभाल के लिए भी मेरी रक्षा (पाण्डवों द्वारा) आवश्यक थी। **...क्रमशः**

सच्चे मित्र के सामने दुख आधा और हर्ष दोगना प्रतीत होता है।

गुरुकुल कुरुक्षेत्र : संक्षिप्त परिचय

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में शैक्षणिक स्तर पर दो प्रकल्प चलते हैं। सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम के अनुसार **10+2** तक का विद्यालय है जो **ISO 9001: 2008** प्रमाणित संस्थान है। इस पाठ्यक्रम के अनुसार यहाँ लगभग 1500 विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। दूसरा **आर्ष महाविद्यालय** है जिसमें वैदिक व्याकरण व वैदिक साहित्य का अध्ययन कराया जाता है। इन शिक्षण प्रकल्पों के अतिरिक्त शिक्षा, समाज सेवा व सामाजिक चेतना को ध्यान में रखते हुए जो विविध गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, इनकी संक्षिप्त झलक निम्न प्रकार है –

प्रशासनिक विभाग : आधुनिक तीन मंजिला प्रशासनिक भवन में अतिथियों के लिए 250 कुर्सियाँ एवं सुविधायुक्त वातानुकूलित सभागार व कार्यालय हैं।

आर्ष महाविद्यालय : वैदिक धर्म एवं वेदों के प्रचार हेतु आर्ष पाठ विधि से व्याकरण एवं वेद के विद्वान् तैयार किये जा रहे हैं।

वातानुकूलित संगणक प्रयोगशालाएँ : गुरुकुल में वातानुकूलित कम्प्यूटरीकृत शिक्षा-व्यवस्था है। यहाँ 75 कम्प्यूटर हैं जिन पर छोटे-बड़े छात्रों हेतु अलग-अलग व्यवस्था है। इनमें प्रोजेक्टर और वाई-फाई की सुविधा भी है।

वातानुकूलित भाषा व विज्ञान प्रयोगशालाएँ : शिक्षा को व्यावहारिक रूप देने व छात्रों के पूर्ण विकास हेतु बहुतकनीकी यन्त्रों से युक्त व दृश्य-श्रव्य यंत्रों से सुसज्जित प्रयोगशालाएँ हैं।

वातानुकूलित पुस्तकालय व वाचनालय : छात्रों के विकास हेतु वेद, उपनिषद्, वेदांग एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का इतिहास व महापुरुषों की जीवनियाँ तथा विज्ञान, दर्शन सम्बन्धी हजारों पुस्तकें व सी.डी. आदि हैं। 21 दैनिक समाचार पत्र एवं 75 साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएँ आती हैं।

अत्याधुनिक गोशाला : छात्रों को शुद्ध एवं पौष्टिक दुग्ध उपलब्ध कराने के लिए गुरुकुल में अत्याधुनिक गोशाला है। जहां पर विभिन्न देशी व विदेशी नस्ल की लगभग 282 गायें हैं जो प्रतिदिन 1150 लीटर दूध देती हैं।

अश्वारोहण (घुड़सवारी): इसके लिए उत्तम नस्ल के 8 घोड़ियाँ व 1 घोड़ा है। कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है।

क्लीनिकल लेबोरेट्री : पशुओं की विभिन्न बीमारियों से संबंधित टेस्ट हेतु लैब है जहां पर अनुभवी डॉक्टर द्वारा पेशाब, खून व दूध आदि की प्रामाणिक जाँच की जाती है।

मित्र बनाना सर्वथा सहज है, मित्रता निभाना कठिन है।

शूटिंग (निशानेबाजी प्रशिक्षण): इसके माध्यम से गुरुकुल ने अभी तक 10 अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी राष्ट्र को दिये हैं।

एन.सी.सी (छोटे-बड़े छात्रों हेतु): गुरुकुल एन.सी.सी. के छात्र गणतन्त्र व स्वतंत्रता दिवस की परेड में भाग ले चुके हैं तथा एन.सी.सी. के कैम्पों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुके हैं।

नेशनल डिफेंस एकेडमी (एन.डी.ए.): सेवानिवृत्त सेना अधिकारी के मार्गदर्शन में एन.डी.ए. परीक्षा की तैयारी के लिए दो एकड़ भूमि पर ऑब्स्टेकल कोर्स का निर्माण किया गया है।

एन.एस.एस विंग : राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सद्भाव हेतु एन.एस.एस. द्वारा सामाजिक चेतना जागृत की जाती है।

विशाल भोजनालय : छात्रों, गुरुकुल से जुड़े सभी कर्मचारियों एवं अतिथियों हेतु विशाल भोजनालय की व्यवस्था है।

संगीतमय फव्वारे : गर्मियों की उमस से बचने एवं मनोरंजनपूर्ण स्नान के लिए आकर्षक संगीतमय फव्वारा गुरुकुल में है।

पं. अमीचन्द संगीत केन्द्र : छात्रों को मनोरंजन एवं संगीत शिक्षण हेतु भक्त अमीचन्द संगीत केन्द्र में संगीत की शिक्षा-व्यवस्था है।

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय : गुरुकुल में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सालय है जो गम्भीर रोगों के उपचार के साथ चिकित्सा सम्बन्धी 'डिप्लोमा इन योग एंड साइंस' कोर्स भी कराता है।

धन्वन्तरि चिकित्सालय : छात्रों के शारीरिक स्वास्थ्य एवं खेलकूद में आने वाली हल्की चोट-मोच आदि के लिए आयुर्वेदिक चिकित्सालय में कुशल वैद्यों की व्यवस्था है।

वेद प्रचार विभाग : भारतीय संस्कृति एवं वेदों के प्रचार हेतु गुरुकुल में वेद प्रचार विभाग का गठन किया गया। जिसके तहत लगभग डेढ़ दर्जन प्रचारक दिन-रात विभिन्न क्षेत्रों में घूम-घूम कर लोगों को वेदवाणी और आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक कर रहे हैं। वहीं योग शिक्षकों के माध्यम से विद्यालय व कॉलेजों में योग एवं चरित्र निर्माण अभियान चलाया जा रहा है।

इनके अतिरिक्त **जैविक खाद एवं कृषि फार्म, स्वामी श्रद्धानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी, आकर्षक पौधशाला (नर्सरी)** भी है। नवनिर्मित **आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र** है जिसमें आर्य भजनोपदेशक तैयार किये जाते हैं। वहीं **'गुरुकुल-दर्शन'** मासिक पत्र के माध्यम से वैदिक धर्म एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

शान्तिनगर स्थित श्रीमती अंजू राणा के निवास में हवन यज्ञ व आर्य समाज हेतु विचार विमर्श करते हुए वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भोपाल सिंह आर्य

गांव लण्ढी में आर्य समाज स्थापना को लेकर माननीय व्यक्तियों से विचार-विमर्श करते हुए वेद प्रचार विभाग के भोपाल आर्य व महाशय जयपाल आर्य

हथीरा गांव में हवन यज्ञ व आर्य समाज स्थापना हेतु विचार विमर्श करते हुए वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भोपाल सिंह आर्य व महाशय जयपाल आर्य

गांव बरगटथली में एक परिवार में हवन यज्ञ व आर्य समाज स्थापना को लेकर विचार विमर्श करते हुए वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भोपाल सिंह आर्य

पिहोवा स्थित आर्य समाज भवन में यज्ञ करते हुए वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भोपाल सिंह आर्य व महाशय जयपाल आर्य व अन्य आर्य महानुभाव

हथीरा में एक कार्यक्रम के समय उपस्थित मातृशक्ति को भजनोपदेश करते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र के भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य व जगदीश आर्य

लाडवा सरदार हरजिन्द्र सिंह के निवा[illegible] भजनोपदेश करते हुए वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भोपाल सिंह आर्य व महाशय जयपाल आर्य

आर्य समाज स्थापना के तहत आयोजित एक कार्यक्रम में भजनोपदेश करते हुए गुरुकुल के भजनोपदेशक महाशय जयपाल आर्य व जगदीश आर्य

JEE MAIN परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गुरुकुल कुरुक्षेत्र के होनहार ब्रह्मचारी

दीपक आर्य

रत्नेश आर्य

आकाश आर्य

सौरभ आर्य

अंकुश आर्य

राजकुमार आर्य

अजीत आर्य

अमृत आर्य

दीपांशु आर्य

ऋजविद् आर्य

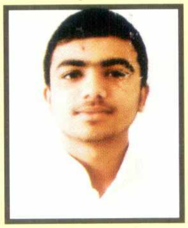
शिवम् आर्य

तरूण आर्य

राहुल आर्य

चन्द्रेश आर्य

प्रांजल आर्य

हितेश आर्य

सुभाष आर्य

हर्षित आर्य

RNI Reg.No. : HARBIL / 2015 / 64244

Postel Regn. No. HR/KKR/181/2015-2017

स्वामी- गुरुकुल कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक श्री कुलवंत सिंह सैनी द्वारा क्रेजी ऑफसेट प्रिंटिंग प्रैस, सलारपुर रोड, निकट डी.एन. कालेज, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से मुद्रित एवं गुरुकुल कुरुक्षेत्र, (निकट थर्ड गेट कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी), कुरुक्षेत्र से प्रकाशित। सम्पादक -कुलवंत सिंह सैनी

मूल्य-15 रु एक प्रति (150 रु वार्षिक)

श्री विनय ...

... , 15 हनुमान